10060

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

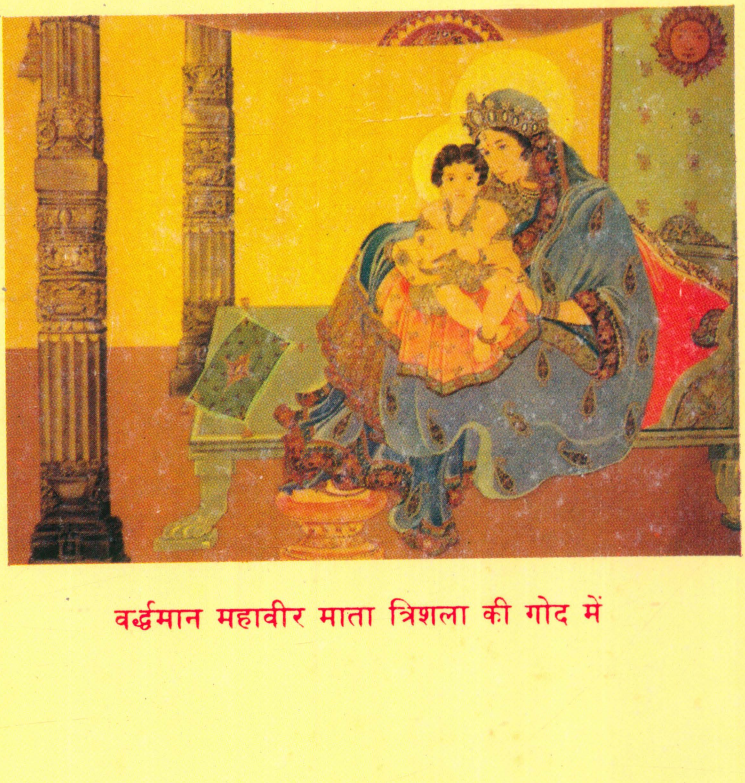

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २७ अंक : १२ मार्च : २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant

Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office

143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office

2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - १२, मार्च, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. शाकाहार की सिद्धान्त	डॉ. जीवराज जैन	६७१
२. पुरुलिया के देवालयों की निर्माण-शैली	श्री सुभाष राय	६७८
३. श्रीचन्दराज चरित्र		६९२
४. संकलन		७०५

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

शाकाहार का सिद्धान्त

डॉ० जीवराज जैन

उस दिन IIM (Indian Institute of Management) के एक नये स्नातक से मुलाकात हुई। मेरी समझ के अनुसार IIM वाले अच्छे विश्लेषक यानि विषय की गहराई में जाने में विशिष्ट शक्तिशाली होते हैं। खाने के बारे में घर पर कुछ बात चलीं तो बोला, अंकल हम अपने आपको शाकाहारी कहते हैं। तथा माँस और अंडे नहीं खाते हैं। इस कारण हम अपने आपको अहिंसक मानते है। यहां तक कि अहिंसा के पुजारियों में गिनती करवाना चाहते हैं।

a) लेकिन, विज्ञान का छात्र जानता है कि हरी सब्जियां या पौधे भी जीव् है— living things हैं। उनमें भी आत्मा है। उनमें भी उपयोग लक्षण पाया जाता है। यानि वे भी जीना चाहते हैं मरना नहीं चाहते हैं। जब इनको मारकर, यानि जीव-हिंसा करके हम खाते हैं, तब फिर हम अहिंसक कैसे हुए? हम भी, यानि शाकाहारी लोग भी हिंसक ही तो है। आगे बोला—

b) इसी तर्क को यदि हम आगे बढ़ायें तो हमारे दर्शन के अनुसार, खास कर जैन धर्म में तो हवा भी जीव है, पानी भी जीव है तथा अग्नि भी जीव है। यानि इन सब पदार्थों को उसी प्रकार का एक एन्द्रिय वाला जीव माना गया है, जैसा कि पेड़—पौधे यानि वनस्पति, एकेन्द्रिय जीव है। अतः सही अहिंसक बनने के लिए तो हमें वनस्पति, हवा आदि सभी जीवों की भी हिंसा नहीं करनी चाहिए? यानि बनस्पति को खाना छोड़ दें, पानी पीना छोड़ दें, श्वास लेना छोड़ दें, अग्नि जलाना छोड़ दें, क्योंकि इन क्रियाओं से हवाके या अग्नि के जीवों की हिंसा होती है? यदि हम ये सब नहीं छोड़ते है तो एकदम जाहिर है कि हम भी हिंसक है। इसका आखिरी मतलब है कि जो मनुष्य, खासकर जैनी, अपने आप को जिंदा रखता है, तो वो हिंसक ही है। अहिंसक बनकर तो जिंदा रह ही नहीं सकता।

c) इससे प्रत्यक्ष सिद्ध होता है कि

i) विज्ञान के हिसाब से शाकाहारी भी वैसे ही हिंसक है जैसे माँसाहारी होते हैं और

ii) जैन दर्शन के अनुसार भी हर मनुष्य, जो जिंदा रह कर जिंदगी जीता है, वह भी महा–हिंसक ही है, क्योंकि वो हवा, पानी आदि जीवों का निरंतर सेवन करता है।

d) विज्ञान ने यह सिद्ध करके कि पौधे भी जीवधारी है, हमारे इस खोकले अभिमान को चकनाचूर कर दिया है कि हम माँस व अंडे नहीं खाकर, यानि उनका त्याग करके अहिंसक बन गये हैं! इन जीवों की हिंसा का त्याग क्रके, शाकाहारियों ने जो अपनी एक अलग पहचान बनाने का प्रयास किया है, उसकी जड़ें अब उखड़ गई है।

उसके ये तर्क बड़ आक्रामक थे। लेकिन सचोट थे। हर व्यक्तिं जो अहिंसा की बुनियादी नहीं समझता। जीव-अजीव से सिद्धान्त की गहनता के विचार में नहीं गया उसके मन में ऐसी जिज्ञासा होना उत्तर देने की कोशिश की गई । इसके लिये पहले हिंसा व जीव पर थोड़ा गहरा विचार करना जरूरी लगा। उसकी जिज्ञासा देखकर आगे कदम बढ़ाया गया।

1. मैंने कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों का यह तर्क बिल्कुल गलत तो नहीं है। हम शाकाहारी लोग भी इसको बखूबी जानते हैं कि पौधे भी जीवधारी हैं। ज्यादातर साधु और गृहस्थ, खासकर जैनी लोग यह भी बखूबी जानते हैं कि जिस हवा, अग्नि आदि का हम उपयोग करते हैं, वो भी जीव है।

(प्रसिद्ध वैज्ञानिक सक जगदीशचन्द्र बोस भी पत्थर, चट्टान आदि में पृथ्वीकाय के जीव मानते थे। तथा उसको भी वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध करने में लगे थे। लेकिन उनकी असामयिक मृत्यु से उनका यह सपना अधूरा ही रह गया। संदर्भ : नेहरूजी के पत्र अपनी बेटी को) इस प्रकार चलने, बोलने में भी जीव हिंसा होती है। मनुष्य आदि इन्हीं जीवों को खाकर जिन्दा रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिन्दा रहना है तो जीवों को खाना है। लेकिन

फिर भी इस हिंसा से बचने के लिए, किसी भी धर्म ने यह नहीं कहा कि अपने आप को मत जीयो। मार डालो अपने आप को और बन जाओ 'सही अहिंसक'। बच जाओ इनकी हिंसा के पाप या अपराध से।

क्यों ? इसका क्या कारण है?

2. यह सब नहीं करने का मुख्य कारण है मनुष्य के अहिंसक बनने का प्रयास तथा विवेक। मनुष्य का अहिंसामय स्वभाव और उसकी अहिंसक मनोवृत्ति उसकी पृष्ठ भूमि में है। वास्तव में हिंसा और अहिंसा का मूल हमारे भीतर–यानि हमारे अंदर ही समाया हुआ है। इसका खुलासा इस प्रकार किया गया है।

इस विश्व में जीव राशि इतनी ठूंस-ठूंस कर भरी हुई है कि छोटी और बड़ी हिंसा के बिना जीवन-चलाना किसी के लिय भी संभव नहीं है। तथापि जीवन–यापन के लिए अपनाई गई मनोवृत्ति के अनुसार अहिंसामय–प्रवृत्ति का निर्णय किया जा सकता है। यह मनोवृत्ति, स्वभाव व प्रवृत्ति सभी प्राणियों में एक समान नहीं होती है। इस स्वभाव और मनोवृत्ति का वर्गीकरण और पृथक्करण, एक सामान्य आदमी की समझ के लिए मुख्यतः ५ भागों में किया गया है। इसका एक पारिभाषिक शब्द है लेश्या। तीव्रता या मन्दता के हिसाब से, यानि उसकी intensity की scale (मापनी) पर ६ प्रकार की लेश्या बताई गई है।

3) इसको समझाने के लिय एक प्रसिद्ध और चिर प्रतिष्ठित दृष्टांत जामुन खाने वाले ६ लोगों का बताया गया है।

जंगल में भटके ६ लोगों के एक झुंड को जोर से भूख लग रही थी। बहुत देर से कोई खाना नहीं मिला था। फिर एक जामुन का पेड़ दिखाई दिया। असंख्य जामुन से भरापूरा एक विशाल वृक्ष था।

i) खुश होकर एक आदमी ने कहा, इस पेड़ को काट कर गिरा देते हैं, तब जी भरकर पके हुए जामुन खायेंगे।

ii) दूसरा कहता है कि पूरा पेड़ काट कर गिराने की जरूरत नहीं है, केवल बड़ी-बड़ी डालियाँ काट का गिराने से अपना काम चल जायेगा।

iii) तीसरा कहता है, नहीं, ऐसा करने की भी जरूरत नहीं है। छोटी-छोटी डालियाँ गिराने से भी अपना काम सफल हो जायेगा।

iv) चौथा कहता है, अरे भाई, पक्के हुए जामुन के बड़े गुच्छे गिराने से भी अपना काम चल जायेगा। तो फिर छोटी डालियों को क्यों काटना?

v) पाँचवा कहता है, नहीं नहीं। गुच्छे भी काटकर क्यों गिराना? सभी पेड़ पर चढ़ जाते हैं और वहीं बैठ कर चुन-चुन कर पक्के हुए जामुन खा लें, तो भी अपना काम हो जायेगा। अपनी भूख शांत हो जायेगी।

vi) अंत में छठा बोला, मेरी बात जरा ध्यान से सुनों। हम सभी भरपेट खा सकें, इससे ज्यादा तो पके हुए जामुन नीचे ही गिरे पड़े हैं। इनको खाकर यदि हम अपनी भूख मिटा सके तो ऊपर चढ़ने की तथा वहाँ से तोड़ने की भी क्या जरूरत है।

इस उदाहरण का अब हम और आगे चिंतन व विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं। इस उदाहरण में पेड़ को काटकर गिराने का विचार कितना खराब है, कितनी लोलुपता से भरा है। और नीचे गिरे हुए पक्के जामुन को चुन-चुनकर पेट भरने का विचार कितना उच्च है, कितना विवेकपूर्ण –है! स्वच्छ और अहिंसक। इस उदाहरण से यह भी समझ में आता है कि पहली श्रेणी का व्यक्ति स्पष्टतया क्रूर और महा हिंसक मनोवृत्ति का प्रतीत होता है और उत्तरोत्तर व्यक्ति कम हिंसक मनोवृत्ति वाला प्रतीत होता है।

मनोवृत्ति के इस वर्गीकरण में मनीषियों ने काले व सफेद रंग का प्रयोग करके, उसकी सघनता के तीन भेद, उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य-भेद बताये हैं। पहले तीन व्यक्तियों की सोच में कालापन मुख्य है तो पिछले तीन में सफेदपन मुख्य है। इसमें विकासक्रम की दृष्टि से क्रमिक–विकास भी निर्दिष्ट होता है। इस तरह पूरा काला, मध्यम काला, अल्पकाला, फिर अल्प श्वेत, मध्यम श्वेत, और पूरा श्वेत दर्शाता है। यानि दूसरे शब्दों में पूरा हिंसक, अधिक हिंसक, कम हिंसक, कम अहिंसक, अधिक अहिंसक और पूरा अहिंसक। क्रमशः उत्तरोत्तर सफेदी का यानि–अहिंसकता का विकास बताया गया है।

इस स्केल पर हिंसक वृति नापी जा सकती है। इसको नापने का कोई दूसरा ज्यादा उपयुक्त उपाय नहीं है। जो भी वृत्ति होगी वो इसी में समाविष्ट होती है। इस दृष्टांत को गहराई से समझने से अहिंसा की सचोट व्याख्या हो जाती है। यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि हर प्रवत्ति यानि कार्य करने में कितने विवेक की आवश्यकता होती है।

४. हिंसा–अहिंसा की मनोवृत्ति इस प्रकार पूर्ण रूपेण समझ लेने के बाद हम थोड़ा जीवों के बारे में , तथा उनके विकास क्रमके बारे में भारतीय चिंतन की व्यवस्था पर विचार करते हैं।

भारतीय दर्शन के जीवों का वर्गीकरण भी उनके उत्थान यानि विकास की अवस्था से किया गया है। इस विकास क्रम में, ५ इंद्रियों को प्रमुख मील का पत्थर माना गया है। एक इन्द्रिय यानि जिनको केवल स्पर्श है, ऐसे शरीर वाले जीव एकेन्द्रीय जीव कहलाते हैं। जैसे खनिज, पानी, हवा, वनस्पति, अग्नि आदि। ये जीव अपनी इसी एक इन्द्रिय से अपना जीवन-यापन करते हैं। बेइन्द्रिय जीव यानि स्पर्श के साथ रसना इन्द्रिय वाले जीव। तेइन्द्रिय जीव, जिनके ध्राण या नाक जुड़ जाता है।

चौइन्द्रिय जीवों के चक्षु तथा पंचेन्द्रिय जीवों के कान जुड़ जाते हैं।

चौइन्द्रिय जीवों के उदाहरण है—मक्खी, मच्छर आदि। पंचेन्द्रिय जीवों के उदाहरण है गाय, तोता और मनुष्य आदि।

इन पंचेन्द्रियों के अलावा एक छठी अंतरंग इन्द्रिय है, मन। तर्क-वितर्क, संकल्प-विकल्प करने की शक्ति का नाम है मन।

इनमें मनुष्य एक विशिष्ट, विकसित प्राणी है। उसका स्नायु-तंत्र, मस्तिष्क और मेरूदंड इतना विकसित है कि उसमें चिंतन पैदा होता है कि मैं अपने जन्म को सफल करूं, दुख मुक्त करूं। इसके लिये उचित मार्ग भी चुनता है। हालांकि यह चिन्तन अधूरा रह जाता है, यदि कोई दुराग्रह रखता है तो। इससे चिन्तन का विकास रुक जाता है।

१. अहिंसक सोच का विकासः इस तरह अहिंसक सोच और जीव के विकास क्रम को जान लेने के बाद, साधारण तर्क वाला मनुष्य भी सोचने पर मजबूर होगा कि यदि एक एन्द्रिय वाले जीव से मेरा जीवन-यापन हो जाता है, तो उच्च विकसित जीव की हिंसा क्यों करूं। यह हिंसा अनावश्यक तथा अनुचित है। इस अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास करेगा। अर्थ-शास्त्र के इस मूल मंत्र को ध्यान में रखने से पर्यावरण के संरक्षण में सहायक बनेगा।

२. संख्या : इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए सोचेगा कि यदि मेरा न संख्या के जीव से काम चल जाता है तो क्यों २ न संख्या की हिंसा का निमित्त बनूं। वास्तव में वो हिंसा के अल्पीकरण की तरफ बढ़ेगा।

३. क्रियाओं का अपरिग्रह : और गहरा चिंतन करने पर वह अहिंसक अपनी समस्त क्रियाओं को चितारना / अनुश्रवण करना सीखेगा। उनको सीमित करने की कोशिश करेगा। अपने उत्थान के लिये केवल

अति-आवश्यक क्रियायें ही करेगा। उन्हीं पर एकाग्र करेगा। बाकी की क्रियाओं पर विवेकपूर्ण अंकुश लगा देगा। त्याग कर देगा। जिससे वो कम से कम हिंसा का भागीदार बने। इस optimisation process (चुनाव-प्रक्रिया) में अकारण और अनर्थ हिंसा से बचने का प्रयास दृष्टिगोचर होगा। इस सोच का अतिसूक्ष्म और विशद विवेचन अपने शास्त्रों में उपलब्ध है। जिज्ञासु लोग उनका आगे अध्ययन कर सकते हैं। यह जिंदगी जीने का एक पूर्णदर्शन है। इसमें भोजन के साथ जुड़ा महत्वपूर्ण विवेक इस प्रकार समझ में आता है:-

१. उपयोगिता : हम खाना क्यों खाते हैं, इसके पीछे क्या आशय है? उत्तर होगा—

शरीर की यह आवश्यकता है, इसलिए खाना खा रहा हूँ। अत: खाना केवल उपयोगिता मात्र है। इससे ज्यादा कुछ नहीं। इस आशय को ध्यान में रखने से एक अनाशक्ति का तथा परमार्थ का दृष्टिकोण विकसित होने लगता है।

२. सदुपयोग /दुरूपयोग- चिंतन में दूसरा बिंदु ध्यान में आयेगा कि मैं जो खा रहा हूँ, उसका दुरूपयोग न हो। यानि में अनावश्यक नहीं खाऊं। क्यों कि मैं जो खाना खा रहा हूँ, उसके साथ अनेक लोगों का श्रम व पसीना जुड़ा हुआ है। श्रम की अवज्ञा व निरादर से बचना है। इससे सहज ही विचार आयेगा कि अन्न का दुरूपयोग न करूं। उसमें लोलुपता भी न रखूं।

३. अनुकम्पा—एक अहिंसक–मनोवृति वाला, चिंतन करेगा कि अपनी जीवन–यापन की क्रियाओं में वह किस प्रकार उच्च विकसित जीवों की रक्षा कर सकता हूँ? उनकी रक्षा का प्रयत्न करना, परमार्थ का दृष्टिकोण रखना उसके चिंतन के सहज पहलू बन जायेंगे। भोजन करने के पीछे जो भाव है—आशय है, वह शुद्ध हो जायेगा, परिष्कृत हो जायेगा।

परिष्कृत यानि शुद्ध भाव रखने पर यदि कोई द्रव्य-हिंसा हो भी जाये, यानि जागरूकता रखते हुए हिंसा हो भी जाये, तो भी आदमी अहिंसक की श्रेणी में ही रहेगा। जो एकेन्द्रिय जीव की अपरिहार्य–हिंसा होती है, उसका विवेक रखता हुआ मनुष्य भी अहिंसक श्रेणी में रहता है।

सारांश रूप में कह सकते हैं कि इस चिंतन धारा से (i) स्वस्थ जीने की शैली (ii) पर्यावरण का संरक्षण (iii) आपसी प्रेम और त्याग (iv)

दूसरों के दुख-निवारण की मानसिकता व (v) अनुकम्पा, अपने आप दृढ़ होने लगती है।

हर व्यक्ति इसका प्रयोग स्वयं कर सकता है और अनुभव कर सकता है। अधिकांश बुजुर्ग लोग तो यह सब जानते हैं, अनुभव करते हैं। लेकिन कॉलेज से निकले आप जैसे युवा लोगों को यह पहलू बताना नितान्त आवश्यक है। जिससे उनको सही समझ व दिशा मिल सके। जागरूकता बढ़ सके।

यह अहिंसक सोच एक बुनियादी तथा प्रभावशाली सोच है। यह व्यक्ति को सक्षम बनाती है, अपनी प्रवृत्ति को निर्दोष तथा परिष्कृत करने में। उसकी प्रज्ञा को उजागर करती है कि उसको क्या खाना है या क्या नहीं खाना है। कौनसी गतिविधि अनावश्यक है या त्यागने योग्य है। सोच संतुलित बनती है।

इस अहिंसक सोच के अलावा, विकास क्रम में मानव ने, भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थों का वर्गीकरण भी किया। जो हम खाना खाते हैं, वो हमारे शरीर में किस तरह metabolise (पचता) होता है? पहले यह रस में बदलता है। उसके बाद कोषाणुओं में बदलना शुरू होता है, जिससे उत्तक और अंग बनते हैं। कोषाणु को उस जीव का जीवित रूप माना गया है। जबकि रस को निर्जीव व भक्ष्य माना गया है। इस प्रकार ७ धातुएं बनती है। रस, खून, माँस, चर्बी, अस्थि, मज्जा और वीर्य।

इस सोच के अनुरूप आचरण, अभ्यास तथा प्रयोग करते रहने से व्यक्ति अनाशक्ति, व विवेक के उच्च लक्ष्य तक चढ़ने में समर्थ बनता है। उसे प्रकृति के सही नियमों का साक्षात्कार होगा। यही विज्ञान है। यही सार्वभौमिक सत्य है, सर्वोत्मुखी प्रवृति है।

पुरुलिया के देवालयों की निर्माण-शैली

श्री सुभाष राय

(बंगाल का आदि धर्म जैन धर्म है इसके प्रमाण हमें स्पष्ट रूप से साहित्य एवं पुरातात्विक अवशेषों से प्राप्त होते हैं। इसी सन्दर्भ में बंगाल के पुरुलिया के उपेक्षित पड़े जैन मंदिरों को जो यहाँ की प्राचीन संस्कृति के निर्देशन है उनके विषय में लेखक ने विस्तार से वर्णन किया है।)

मानभूम तथा पुरुलिया के देवालयों के निर्माण में चार शैलियां देखने को मिलती है। (१) रेख या शिखर शैली का देवालय (२) पीड़ा या भद्र शैली का देवालय (३) शिखर शीर्ष पीड़ा या भद्र शैली में बना देवालय (५) स्तूप शीर्ष पीड़ा या भद्र शैली में बना देवालय। लेकिन यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पुरुलिया में रेख या शिखर शैली के देवालयों की संख्या अधिक है। जैसे बादा का देवालय, पाड़ा का देवालय, पाकबिड़रा का देवालय, दूधपुर का ध्वंस हो चुका देवालय, देउल घाटा का पत्थर और ईंटों से बना देवालय, तेलकूपी का देवालय, टुशाया का देवालय आदि।

पुरुलिया के कलाकारों ने रेख शैली को उड़ीसा के कलाकारों की मंदिर निर्माण पद्धति से लिया था। उड़ीसा के निर्माण शिला जैसे ही (रेख देवालय) पुरुलिया के मंदिरों को आधारभूमि से शीर्षस्थल पर चार खंडों में बाँटा गया है। ये हैं—पिष्ट, बाड़, गंडी और मशुक। पिष्ट निर्माण का वह अंश है, जो दिखता नहीं। यह जमीन के नीचे ही रहता है। देखने पर ऐसा लगता है, जैसे बिना आधार भूमि के देवालय मिट्टी से बना हुआ है। बाड़ या बीच के अंश के तीन प्रधान खंड़ होते हैं। ये हैं—पा, जांघ और बरओ। जांघ के बीच कभी कभी उभरी हुई रेखाएं नजर आती है। इन्हें बन्धना कहते हैं। रेख शैली के देवालय की सुन्दरता उसका घेरा हुआ अंश है। मानभूम के देवालयों में घेरवाले अंश में कलाकारों ने छोटे देवालय, चैत्य, फूल, पशु-पक्षियों के चित्रों का सृजन किया है। कलाकार की कल्पना, इन अंशों में जीवंत हो उठी है। पुरुलिया के सभी देवालयों में पाड़ा का देवालय अपने घेरयुक्त अंश की कलाकारी के लिए सबसे अधिक चर्चित है। यहाँ दूसरे

दृश्यों के साथ साथ पत्थर पर खुदे हुए नृत्यरता रमणी, प्रसाधन में व्यस्त नारी, इन्तजार करती नारी आदि विभिन्न दृश्य है, जिसका आज बहुत कम ही बचा रहा गया है। बाकी सारी कलाकारी समय की निर्मम चपेट, धूप, बरसात में, बिना देखरेख के नष्ट हो चुका है। रेख देवालय का मशुक नाम का अंश भी चार भागों में बिभक्त है। बेंकी, आमलक, कलम और ध्वजदंड। पुरुलिया के बहुत पुराने कुछ एक देवालय, जो आज भी हजारों बाधा के बाद भी टिके हुए हैं; उनके बेंकीवाले अंश को ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि वह अंश कहीं सीधा उठ गया है ऊपर की तरफ या फिर कहीं कलश की तरह टेढ़ा है। ज्यादातर क्षेत्रों में आमलक अंश दिखने में कमल जैसा होता था। चार-पाँच बड़े खंड़ों को काटकर ऊपर बिठाया गया है जिससे ऐसा लगे कि ऊपर से नीचे तक एक सम्पूर्ण कमल ही बिठाया गया हो। पत्थर के भारी टुकड़ों को जोड़ पाना सहज नहीं था। मानभूम के देउलों (देवालयों) के मशुक अंश का कलश किस रूप में था, यह पाकबिड़रा, बुधहर, गजपुर, छड़रा में अनादृत कलशों को जमीन पर लुढ़कते हुए देखने के बाद जाना जा सकता है। कलश पर जो ध्वजदंड होता था, उसका प्रमाण कलश के मुँह के छेदों से पता चलता है। पुरुलिया में कहीं भी अक्षत रूप से कलश एवं ध्वजदंड युक्त देवालय नहीं दिखता। बान्दा का देवालय ठीकठाक होते हुए भी उसपर कलश और ध्वजदंड नहीं है।

पर्सी ब्राउन ने अपनी किताब Indian Architecture Vol I. के ३१वें अध्याय में बंगाल के रेख शैली विशिष्ट देवालयों का उड़ीसा के मंदिर निर्माण-शैली से प्रभावित होने की बात कहीं है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने मानभूम और बछलाड़ा के मंदिरों की बात कहीं है। मानभून के प्राचीन देवालयों का आधार अधिकांशतः रथ माना जाता है। जब आधार भूमि को छोड़कर निर्माण उर्ध्वमुखी बनकर यात्रा करता है, रथ की सूचना वही होती है। यह रथ मूल मंदिर का ही एक अंग है।

उड़ीसा के मंदिर निर्माण शैली युगीन परिवर्तन के साथ बदलती रही है। लेकिन पुरुलिया की प्राचीन शैलियाँ अपने निर्माण व प्रविधिगत विशेषता लगभग एक सी ही रही है। युगीन प्रभाव का कही प्रमाण नजर ही नहीं आता लगता है, जैसे एक ही समय उनकी प्रतिष्ठा हुई हो। असल में पुरुलिया के

कलाकार उड़ीसा की निर्माण शैली के युगीन परिवर्तन का अनुसरण न करते हुए प्राथमिक निर्माण तल को प्रयोग करते हुए आगे बढ़े हैं।

जैसे घट (कलश) व पत्तों की धारणा को छोटा बनाने के लिए दीवार के निचले हिस्से में दूसरी कलाकारियों के साथ युग्मरूप से कुम्भ व पट्ट का सन्निवेश किया जाता है; लेकिन इसका भीतरी अर्थ यहां के कलाकारों को मालूम नहीं। इसीलिये यहाँ कुम्भ पर पाता के बदले खुर नाम का काम देखा जा सकता है। काम की संख्या और प्रकृति में भी फर्क नजर में आता है। उड़ीसा के निचले स्तर पर पाँच से अधिक काम नहीं है। लेकिन पुरुलिया में कामों की संख्या और सन्निवेश में रीति का अभाव सा दिखता है। विवर्तन के कारण उड़ीसा में जंघा-अंश, तीन उप अंगों में बँट जाता है। पुरुलिया के विरल क्षेत्रों के अलावे इस अंग का एक से अधिक विभाजन नहीं हुआ। जंघा के बीच राहा नामक उभरा हुआ अंश है जिसके दोनों पार्श्ववर्ती रथों पर कतार में खड़े अर्धस्तम्भ पुरुलिया के मंदिरों को एक अलग ही सुंदरता प्रदान करती है।

"उड़ीसा में बाड़ और शिखर का विभाजन करनेवाला जो कन्ट का स्थान है उसे बाद में कुछ कामों द्वारा अधिकृत कर लिया गया। पुरुलिया की प्रथा अनुसारी शैली के अन्तिम पर्यायों में भी रेख शैली के देवालयों से कन्ट हटाया नहीं गया। शिखर के मामले में उड़ीसा जैसा पुरुलिया में भी निचला तल विभाजन समकोणीय होता था, लेकिन बाद में वह वर्तुल की आकृति का बनता चला गया।"

(पुरुलिया मंदिर स्थापत्य, दीपक रंजन दास से उद्धृत व अनुदित)

लेकिन इस अंचल में उड़ीसा जैसा शिखर के प्राचीन रथ के आनुभामक अक्ष पर कभी भी बाहर की तरफ निकला हुआ तल दिखाई नहीं देता। देवालय का स्वरूप ठोस आकार धारण करता है, इसी कारण लम्बे होते हुए अक्ष में जो कोण है, वे वृत्ताकार बनकर शिखर को कमनीय नहीं कर सका है। ठीक उसी तरह राहा और उसके पार्श्वरथ के मिलन स्थल पर क्रमिक घटते हुए स्तर में निर्मित अंगशिखर की अनुपस्थिति पुरुलिया के शिखरों को उड़ीसा के शिखर से पृथक करते हैं।

वाघ के देवालय में भी उड़ीसा के मंदिर-गात्र अलंकरण में जिस जालिका का (लता-पत्तों आदि का) व्यवहार होता है, उसी प्रकार की जालिका

मिलती है। इसके अलावे पुरुलिया के मंदिरों में चैत्य-जनकों (गवाक्षों) को भी देखा जा सकता है। पुरुलिया के देवालयों में माशुक अंश के ऊपर स्थित विशाल आमलक शिला की उपस्थिति, उसका निजी वैशिष्टय है।

पुरुलिया की देवालय निर्माण शैली की एक और विशेषता है, देवालय के सामने पत्थर से बने बरामदे का होना। आज लगभग सभी देवालयों के बरामदे घँसकर टूट चुके हैं। सिर्फ बान्दा के देवालय का बरामदा किसी तरह टिका हुआ है। वह भी टूट गया था लेकिन पुरातात्विक सर्वेक्षण और संरक्षण विभाग, भारत सरकार की सहायता से उसे पुराने ढांचे पर पुनर्निर्मित किया गया है। लेकिन कुछ स्तम्भ और वड़े-बड़े पत्थर के खंड़ों को देखने से लगता है कि बरामदा शायद और बड़ा रहा होगा। ठीक ऐसे ही बरामदे बुधपुर, पाकबिड़रा, महादेववेड़या के देवालयों में भी मौजूद था, यह पत्थर के विशाल खंभों को देखने से पता चलता है। लेकिन आज सारे टूट चुके हैं।

पुरुलिया के विभिन्न जगहों पर एक से ज्यादा, पत्थरों से बना उत्सर्गीकृत देवालय देखने को मिलता है। पाकबिड़रा, बार हमास्या छड़रा आदि स्थानों पर ये देवालय पाये जाते है। आज सबसे बड़ा उत्सर्गीकृत देवालय ३/४ –८ ऊँचाई वाला है, जो पाकबिड़रा में पाया जाता है। यह स्फटिक के पत्थरों से बना है। चार दिवालों में चार तीर्थंकरों की चार मूर्तियां खुदी हुई है।

ईंट का देवालय : ईंट से बने हुए देवालय, पुरुलिया के निर्माण शैलो का एक महत्वपूर्ण अंग है। इस समय गिरते हुए, विलुप्त होते हुए ईंट से बने जो प्राचीन मंदिर आम दर्शक देख पाता है। वे हैं—देउलघाटा, आड़घा पाड़ा, छोटबलरामपुर आदि । इसके अलावे, जिन सब जगहों पर कभी ईंटों का देवालय था, वहीं अब मिट्टी में मिल चुका है। ये जगह हैं—शाँका, देउलभिड़या, पाकबिड़रा, मंगलदा आदि। हो सकता है, अतीत में और भी बहुत सारे पत्थर या ईंटों के प्राचीन देउल होंगे, लेकिन आज वे सब विलुप्त हो चुके हैं। इन सभी टूटे-फूटे और विलुप्त देवालयों का समयकाल १०वीं सदी से १२वीं सदी है। बाद के मुसलिम युग में एवं उसके बाद १५वीं से १७वीं सदी में भी मानभूम में विष्णुपुर घराने के कई मंदिर बनाए गए। ये हैं-

चेलिंयामा का राधामाधव मंदिर, आचकोदा का टेराकोटा मंदिर, बेड़ो का जोड़बाग्ला मंदिर, बाघमुंडि का राधागोविन्द मंदिर, पंचरत्न शिव मंदिर, चाकलतोड़ के श्यामचाँद का जोड़-बाग्ला शैली में बना मंदिर, गांगपुर का रघुनाथ मंदिर, आड़रा का मंदिर, लागदा का श्यामचाँद मंदिर, पंचकोट रघुनाथ मंदिर आदि।

पुरुलिया के प्राचीन ईंटों से बने देवालयों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि प्रत्येक देवालय लगभग ३ से ४ इंच ऊंची वेदी पर अधिष्ठित है। प्रवेश-मार्ग त्रिकोण आकार का है, जैसे पाड़ा के देवालय मंदिर के ऊपर एक से अधिक रथ या उपरथ देखने को मिलते हैं एवं वे देवालय के शीर्ष तक फैले हुये है। वर्गीय आकृति से बने गर्भ गृह काछत लहरा पद्धति से निर्मित किया गया है। भीतर कोई दीप-स्थान नजर नहीं आती। लेकिन पत्थर देवालयों जैसा बाहर चार दीवारों पर जगह बनाए गये दीख जाते हैं, जहाँ सम्भवतः दीपक नहीं, देवी देवताओ की मूर्ति रखी जाती थी।

देवालय के बाहर तीन अंश साफ साफ नजर आता है। निचला हिस्सा, जंघा और बर। देवालयों पर जो रथ या उपरथ देखने को मिलता है उनकी आकृति देवालय के अनुरूप या कहीं कही स्तम्भ के अनुरूप है। पाड़ा में इसी कारण देवालय पर अनेक छोटे छोटे देवालयनुमा आकृति देखने को मिलती है। धनबाद जिले के पाँड़रा में पत्थर से बने कविलेश्वर मंदिर पर भी सैकड़ों देवालय जैसे आकृति दिखाई देती है।

पुरुलिया में ईंटों के देवालयों की निर्माण शैली का विवरण देते हुए दीपक रंजनदास लिखते हैं—किसी किसी पत्थर से बने मंदिर में एक घेरने की रीति पाई जाती थी, जहाँ फीते जैसा बेडकर जंघा के शीर्षस्थान को घेरने की रीति थी। एक गहरा कंठ अपने दोनों आनुभूमिक प्रान्तों के बराबर घने रूप से सम्बद्ध, दो भारी काम द्वारा सृष्ट वर, बाड़ व शिखर को स्पष्टतः विभाजित करता था। शिखर की उच्चता हर जगह पर दीवार की उच्चता से अधिक थी। नीचे अनुपस्थित शिखर का वक्रभाव उर्ध्वमुखी होने से कारण शिखर एक सरलरेखा में खड़ा सा दिखता था।

वर्तुल आकृति की भूमि आमलक द्वारा शिखर को कई भूमिगत आधारों पर बाँट जाता था। आज जबकि इस प्रकार के सारे मंदिर शीर्ष ढह

चुके हैं, इसीलिए यह कहना मुश्किल है कि शिखर का भूमितल किसी निर्दिष्ट संख्या में बाँटा जाता था या नहीं। शिखर पर अंगशिखर होने पर भी वह कभी भी स्वतंत्र सत्ता में प्रकट न हो सका। इसीलिए मंदिर का लम्बा सा ढाँचा सीधा और स्पष्ट प्रकटित होता था। शिखर के निचले हिस्से में एक बड़े चैत्य जनले (गवाक्ष) का नक्शा देखने लायक है। देवालय पर दिखाए गए देवालय की अनुकृति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ढह चुके शीर्ष पर स्थापित मशुक को बेकी, आमलक खपुरो और कलश द्वारा दिखाया जाता था।

ईंट से बने लगभग सभी देवालयों में चूने का लेप लगाया जाता था, इससे जहाँ बारिश और धूप से देवालयों की रक्षा होती थी, वहीं चूने पर नाना प्रकार की चित्रकारी करना व नक्शे उतारना बड़ा आसान था। चूना नर्म रहते समय ही उस पर चित्रकारी की जाती थी। दीपक रंजन दास कहते हैं "कच्चा रहते समय चूने के लेप पर जिस प्रकार के नक्शे बनाए गए और चित्रकारी की गई–उस दृष्टिकोण से ये देवालय भारतीय कला का एक अपूर्व अनुपम उदाहरण है।" देवालय के निर्माण में जिन ईंटों का इस्तेमाल होता था वे मोटे तौर पर लम्बाई और चौड़ाई में ६ इंच और ३ इंच के होते थे। विभिन्न जगहों पर विभिन्न प्रकार के नाप के ईंट व्यवहार में लाए जाते थे। इनमें से सबसे बड़ा ईंट लम्बाई में ९ ईंच और चौड़ाई में ९ईंच था। लेकिन आज के ईंटों से इनका कोई मेल नहीं है। पर हो सकता है कि ईंटों को बनाने का तरीका समान रहा हो। मिट्टी को पानी के साथ मिलाकर गूँथते हुए काला बनाया जाता था और कुछ दिन उसी तरह रखा जाता था। इसे यहाँ जावाई रखना कहते हैं। बाद में उसी मिट्टी को फिर से पानी में नरम करने के बाद साँचे में ढ़ाँलकर विभिन्न अनुपातों में तैयार कर धूप में सुखाकर काठ से जलाया जाता था।

ईंट के देवालय कभी बहुत अनुपम होते थे, इसे पाड़ा और देउलघाटा के देवालयों को देखने से मालूम पड़ता है। इसके अलावे लता, फूल, पत्ते, विभिन्न प्रकार के प्राणी, देव देवियों की मूर्ति, नृत्यरता रमणी, नक्शे आदि अपनी सुन्दरता से सबका मन मोह लेते है।

पत्थरों से बने देवालयों जैसे ईंटों के देवालयों में भी जलनिष्कासन प्रणाली बनी हुई थी। जिस वेदी पर तीर्थंकर या देव देवियों की मूर्ति बनी हुई

थी, वही से नाला निकल जाता था और हाथी, मगरमच्छ या दूसरी कोई आकृति बनी रहती—जिसके मुँह से पानी निकलकर चहबच्चे में जमा होता था। देउलघाटा जाने पर इस व्यवस्था को अच्छी तरह से देखा जा सकता है। हर ईंट का देवालय ही ऊँची वेदी पर प्रतिष्ठित था, ऐसा जोर देकर नहीं कहा जा सकता। जैसे पाड़ा के बेदीमूल की ऊंचाई लगभग ४ ईंच ४.५० ईंच है, लेकिन देउलघाटा का बेदीमूल बहुत कम ऊँचा है। प्रस्तर या पत्थर से बने देवालयों का प्रवेश-पथ में जितनी कलाकारी से भरी होती थी, ईंट से बने देवालयों में उतनी कलाकारी नहीं पाई जाती।

मानभूम के प्राचीन ईंटों के देवालयों का निर्माणकाल सही रूप में बताना मुश्किल है। परन्तु लगभग १० से ११वीं सदी के समय इनका निर्माण हुआ होगा। कई लोगों का मानना है कि देउलघाटा का देवालय ९वीं से १०वीं सदी में बना है। लेकिन दीपक रंजन दास का कहना है कि उच्चबेदी पर मंदिर प्रतिष्ठा, गर्भगृह में आधे से अधिक अंश से ज्यादा दीवार, पांचसे अधिक रथ समन्वित आसन, निचले भाग में काम के मूल चरित्र का विस्मरण और काम की संख्या कम से कम पाँच से अधिक करना ऊँचाई के प्रति अधिक आकर्षण आदि विशिष्टताएं इन मंदिर समूहों को ११वीं सदी के बाद बने होने की ही सूचना देती है।

तैलकम्प या तेलकूपी : आज दामोदर के गर्भ में विलुप्त हो चुकी तैलकम्प या तेलकूपी, उस जमाने की एक बड़ी बन्दरगाह नगरी थी। नगही का नाम तेलकूपी क्यों पड़ा, इसे लेकर पण्डितों में काफी विवाद है। कईयों के अनुसार संस्कृत तैलकम्प से तेलकूपी शब्द आया है। संस्कृत में तैल मतलब तेल। कोटिल्य के अर्थशास्त्र में तैल को एक प्रकार का कर माना जाता था। कम्प आया है कम्पन से। कम्पन का अर्थ है परगना। तो, यह अनुमान किया जा सकता है कि आज का तेलकूपी किसी समय एक करप्रदान करने वाला सामंती राज्य था।

तरुणदेव भट्टाचार्य के अनुसार विलिंग या तैलंगो को यह कर प्रदान किया जाता था। लेकिन यह मत भी विवादास्पद है। प्राचीन इतिहास में तेलकूपी को लेकर ठोस कुछ भी नहीं पाया जाता। लेकिन संध्याकर नदी के रामचरितम काव्य में तेलकम्प शब्द मिलता है।

"शिखर इति समर परिसर सिसदरिराज राजिगंज गब्बगहन दहन दावानल स्तैलकम्बीर कल्पतरू रुद्रशिखर"

अर्थात् युद्ध में जिसका प्रभाव नदी पर्वत से विस्तीर्ण था, पर्वत कन्दर के राजवर्गो का दर्प हरण करनेवाले, दावानल के समान, वह तैलकम्प के कल्पतरू रूद्रशिखर है।

संध्याकर नंदी रचित रामचरितम काव्य की समयसीमा मोटे तौर पर १०७०-११२० ई० है। काव्य का मूल विषय पाल वंश के शासक रामपाल की कीर्तियों का वर्णन है। कवि ने अपनी काव्यप्रतिमा के रूप में एक ही संकेत में अयोध्या के राजा राम और पाल नरेश रामपाल का यशोगान किया है । रामचरित काव्य में रूद्रशिखर तैलकम्प के राजा घे इसे हम बोड़ाम में पाये कर गए शिलालेख से भी हम जान सकते है।

मगध और राढ़ में पालवंश का अधिपत था। पालसम्राट रामपाल के साथ रूद्रशिखर की मित्रता थी-इतिहास में इसको पुष्ट प्रमाग मिलता है। अपने पैतृक राज्य के उद्धार के समय रूद्रशिखर ने रामपाल की सहायता की थी ऐतिहासिक सूत्रों से पता चलता है कि मानभूम, पुरुलिया, पंचकोट और तैलकम्प के चारों ओर जितने भी राज्य थे, उनके साथ रामपाल की मित्रता थी। उस जमाने का तैलकम्प राज्य दामोदर के दक्षिण से काँसाई के उत्तर तट तक फैली हुई थी। पश्चिम में झालदा से दक्षिण में बुधपुर तक इसकी सीमा था। बुधपुर तक सीमा थी यह इस लिपि से ही प्रभावित होती है। जिसमें कहा गया हैं—

राढ़ से घिरे हुए पंचद्रिश्वर की सीमा को कोई भंग न करे।

राजा रुद्रशिखर जैन धर्मी थे क्यों कि उनके समय जैनधर्म ने राढ़, विशेषतः मानभूम में विस्तारलाभ कर लिया था—यह प्रमाणित होता है— तेलकूपी, बान्दा, पाड़ा, शाँका, बोड़ाय, पाकबिड़रा, बुधपुर आदि के पुरातात्विक अवशेषों स्थलों से रचे। डि. वि. सि. (दामोदर वैली कॉरपोरेशन) के कारण आज तेलकूपी बन्दरगाह पूरी तरह पानी के नीचे डूब चुका है। सोचने पर आश्चर्य होता है कि डि. वि. सि. के कार्यकारिणी सदस्य पंचेत डैम बनाते समय तेलकूपी के प्रख्यात मंदिरों की तरफ एकबार भूलकर भी नहीं देखें। वे एकबार के लिए इन दुर्लभ ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने की बात भी

नहीं सोची। इसीकारण १९५७ की उस रात को तेलकूपी पानी में डूब गया। लोग बेघर हुए, बेसहारे बन गए। सारे मवेशी पानी में बह गए।

अब प्रश्न है कि तेलकूपी पानी में डूबने से पहले यहाँ कितने मंदिर थे? इसका जबाव हमें D.J.Eeglar रचित 'Report of a Tour through' the Bengal Province नामक रचना में प्राप्त होता है। १८७८ में लिखे गए इस वर्णन में उन्होंने २० मंदिरों के होने की बात कहीं है। इसके अलावे, वे वहाँ पर कुछ ईंटों और पत्थरों के खंडहार देखे थे जो आज पूरी तरह ध्वंस हो चुके हैं। १९०२ में ब्लक ने १० मंदिरों को वहाँ पर देखा था। आज सिर्फ तीन ही मंदिर किसी प्रकार वहाँ टिके हुए हैं। लेकिन उनमें से दो की हालत इतनी बुरी है कि कभी भी उन्हें ढहते हुए हम पा सकते हैं।

आज भी एक सवाल मन में झाँकता है कि यहाँ इतने सारे मंदिर कैसे बने? ये मंदिर किस सम्प्रदाय के हैं—या किस समय के है? सवाल उठता है कि तेलकूपी ही बन्दरगाह क्यों बनी? इतिहास इन सब सवालों का जवाब नहीं देती। सहीरूप से किसी सिद्धान्त तक पहुँचना बड़ा मुश्किल है। तेलकूपी के मंदिरों का आनुमानिक समयकाल दसवी-ग्यारहवी सदी ई० है। उसी समय बंगाल में पालवंश का शासन चल रहा था। जैनधर्म का प्रचार-प्रसार उस समय समस्त बंगाल में फैला हुआ था। इस विस्तार में जैन व्यवसायी काफी उत्तरदायी थे। ये लोग ताम्बे के व्यवसायी थे। उस जमाने के दो विख्यात ताम्बे के खान थे—तामाजुड़ी और तामाखुन। इन सब खानों से जैन व्यवसायी एक सड़क मार्ग से ताम्बा लाकर तेलकूपी बन्दरगाह में नाव पर चढ़ाते थे। उस जमाने में सड़क मार्ग मान बाजार पुरुलिया, छड़रा, पाड़ा, शाँका, मंगलदा, बान्दा होकर तेलकूपी पहुँचता था। इन सब खानों से जैन व्यवसायी एक सड़क मार्ग से ताम्बा लाकर तेलकूपी बन्दरगाह में नाव पर चढ़ाते थे। उस जमाने में सड़क मार्ग मान बाजार, पुरुलिया, छड़रा, पाड़ा, शाँका, मंगलदा, बान्दा होकर तेलकूपी पहुँचता था। इन अंचलों में पुरुलिया के अलावा लगभग सभी स्थानों में पुरातात्विक अवशेष बिखरे पड़े है। बान्दा या पाड़ा में दो एक देवालय अब भी बचे हुए है। जैन व्यापारियों ने विश्राम के लिये और रात गुज़ारने के लिये अपने अपने अभीष्ट देव देवियों की प्रतिष्ठा की थी। इसके बाद में जैन व्यापारी दामोदर

नदी पर अवस्थित तेलकूपी बन्दरगाह से होते हुए नाव से ताम्रलित बन्दरगाह तक पहुँचते थे। उसके बाद ये व्यापारी ताम्रलिप्त होते हुए सागर की तरफ यात्रा करते थे। इसके अलावे एक जातीय सड़क या राजमार्ग का भी हमें पता लगता है। उस समय के इस राजमार्ग का फैलाव काफी लम्बा था। मेदिनीपुर से तमलुक होकर उत्तर दिशा में रूपनारायण नदी के पश्चिम तट के बराबर घाटाल अंचल के क्षेपुतपुर—दासपुर पाना घाटाल होकर शिलावती नदी पार कर कभी उसे दाहिने या कभी बाँए रखते हुए बाँकुड़ा जिले के विष्णुपुर छातना और शुशुनिया होकर पुरुलिया के रघुनाथपुर व तेलकूपी के ऊपर से होकर यह सड़क जाता था। उस जमाने के बड़े व प्रतिष्ठित व्यापारी इसी राह से चला करते थे। तो जल और स्थल, दोनों राहों से ही तेलकूपी एक केन्द्रीय व्यापार की भूमि थी। और इन्हीं व्यापारियों के हाथों ही ये देवालय बने थे। लेकिन सारे मंदिर जैन व्यापारियों द्वारा ही निर्मित थे जिनमें कुछ मन्दिर परवर्ती काल में हिन्दू मन्दिरों में परिवर्तित किये गये। अब तेलकूपी के मंदिर और मूर्तियों की बातें की जाए। अनगिनत देवालयों में अब सिर्फ तीन ही देवालय टिके हुए हैं। इनमें से दो, बारिश के मौसम में सम्पूर्ण जलमग्न रहता है और एक जेठ के महीने के सिवाय सारा साल जल में डूबा रहता है। कितने दिन और यें टिक पायेंगे इसमें घोर संदेह है। दामोदर के पास ही पाथरबाड़ी गाँव बसा है। इस गाँव से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर एक टूटा देवालय प्राकृतिक थपेड़ों को सहता हुआ पूरब दिशा की तरफ हिलकर टिका हुआ है। इसकी निर्माण प्रकृति बान्दा के देवालय जैसा है। यह मोटे तौर पर ५०-५५ फुट लम्बा था, लेकिन अभी इसकी उच्चता ४५ फुट के करीब होगी। इसकी चौड़ाई १५ १/२-१३ १/२ फुट है। बान्दा के देवालय से यह आकार में काफी छोटा है। परन्तु शिल्पकारों ने इसे एक ही शैली में बनाया था, इसमें कोई संदेह नहीं है। देवालय के राढ़ अंश का काफी भाग धँस चुका है। देवालय पूर्व दिशा की तरफ बना हुआ है। इसके मूल द्वार के बने अलंकार बान्दा के मंदिर से मिलता जुलता हैं। दोनों तरफ त्रिशूल हाथ में लिए दो द्वाररक्षक खड़े दिखते हैं, जो पहले अद्भुत आलंकारिक सजावटों से सुसज्जित थे। देवालय के तीन कोणों में तीन स्थान बनाए गए थे खोदकर, जिनमें तीर्थंकर की तीन मूर्तियाँ विराजमान थीं। वे सब आज

नहीं है। मूल बेदी आज भी बनी हुई है पर कोई तीर्थंकर मूर्ति विराजमान नहीं है। देवालय के भीतर जल निष्कासन की अच्छी व्यवस्था नजर आती है। पूजा अर्चना के समय जो पानी व्यवहार में लाया जाता था वह इसी निष्कासन नाली से होता हुआ सीधा दामोदर में चला जाता था।

तेलकूपी गाँव के बीचवाला देवालय पूरी तरह पानी में डूबा हुआ है। वैशाख या जेठ के महीनों के अलावे यह सारा साल पानी में डूबा रहता है। फिलहाल यह पानी से आठ फुट की ऊँचाई पर खड़ा है। इसकी निर्माण प्रक्रिया कुछ स्वतन्त्र प्रक्रिया के आधार पर भी हुआ है। यह देवालय स्तरों पर बना हुआ है। एक स्तर से दूसरे स्तर तक की ऊँचाई दो फुट की दूरी पर स्थित है। यह भी ५०-५५ फुट का है। लेकिन पश्चिम दिशा की तरफ बस हुआ है। पहले अंदर मूर्ति थी पर अब नहीं है। शीर्षक बिजली गिरने के कारण ध्वंस हो चुका है। पहले इस पर चूने का लेप लगा था और उस पर कलाकारी की गई थी।

अब यह सबकुछ ध्वस्त हो चुका है, धुल चुका है। द्वार के दोनों तरफ दो बैल और शेर की मूर्ति बनी है। इससे पता चलता है कि भीतर आदिनाथ एवं महावीर स्वामी की मूर्ति बनी हुई थी।

इस देवालय से दो किलोमीटर की दूरी पर कुछ कम पानी में एक और देवालय खड़ा है। यह उत्तरमुखी है एवं इसकी निर्माण शैली पहले मंदिर जैसी है। इसके माथे का अंश सम्पूर्ण नष्ट न होते हुए भी लगभग विनाश के कगार पर ही खड़ा है। शीर्षक के आमलक अंश के कई पत्थर के टुकड़े गिर चुके हैं। सिर्फ एक गोल पत्थर किसी तरह अटका हुआ है। यह देवालय भी ५० फुट के करीब ऊँचा था। जिस तरह से पानी के निरन्तर स्पर्श से ये देवालय नष्ट होते जा रहे हैं—कब इनका ढाँचा पूरी तरह से धँस जाएगा, कहा नहीं जा सकता।

अब तेलकूपी के मंदिर के बाद मूर्ति की बात आती है। जब यहाँ बीस देवालय थे या उससे भी पहले के खंडहरों में सैकड़ों मूर्तियां बनी हुई थी लेकिन ये सारे देवालय पानी के नीचे जा चुके है। सिर्फ गुरुडी, तारापुर और लालपुर के सहृदय कुछ एक लोगों की कोशिश के कारण आज सिर्फ दो मंदिर ही बच पाए हैं। यहाँ की मूर्ति के प्रसंग में काशीनाथ देवरिया ने

लिखा था—"बिहार में रहते समय चौथी कक्षा के भूगोल में १३ मंदिरों की बात पढ़ी थी। जितना याद है—दामोदर के दक्षिण में ये मंदिर बने थे। मूल मंदिर के गर्भगृह में विशालकाय भैरव विराजमान थे। अंधेरे में ढँके गर्भगृह में, एक बड़ा सा प्रदीप (दीपक) जलता रहता था। भक्तगण भक्ति के साथ पुजारी के निर्देश अनुसार भैरव के माथे पर बेल-पत्ते, कच्चा दूध चढ़ाकर मंत्रोच्चारण करते थे—नमः शिवाय शान्ताय कारण त्रय हेतवे.........।" यह भैरवनाथ और कोई नहीं तीर्थंकर हैं। नदी के बिल्कुल पास था प्रवेश पथ प्रवेश पथ के संलग्न आंगन में एक भैरवी की मूर्ति थी। उन्हें प्रणाम करके मंदिर में प्रवेश करने का रिवाज था। प्रवेश पथ के बाई तरफ एक छोटा घर बना हुआ था। उसमें पत्थर का शिशु, जो अभी जन्मा हो, प्रसूति और धाई माँ (धारी) की मूर्तियां बनी हुई थी। इन सबका अर्थ क्या है, आज तक मैं निकाल न सका। मंदिर से नदी की ओर जाते समय उत्तर की ओर एक पत्थर का घट बना हुआ था।

आज यह सबकुछ दामोदर के नीचे जा चुका है।

खड़रा गाँव से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं पाथरबाड़ी गाँव। इस गाँव से १/२ किलोमीटर दूर एक सूने मैदान में खुले आसमान के नीचे, बिना संरक्षण के, एक पत्थर की मूर्ति पड़ी हुई है, यह एक चतुर्भुज देवीमूर्ति है। हवा और पानी से निरंतर घिसने के कारण हाथों में बने अस्त्रों की पहचान कठिन है। यह मूर्ति एक हाथी पर बैठी है। हाथी की अपूर्व निर्माण शैली आज भी उसी तरह अद्भुत सुंदर है। खगेन्द्रनाथ माजी के अनुसार यह जैन देवी चक्रेश्वरी की मूर्ति है। स्थानीय लोग इन्हें नीलकंठवासिनी के नाम से पूजते हैं। कुछ दिन पहले अंचल के धनाट्य व्यक्ति बिज महाला के उद्योग से मूर्ति को मिट्टी से निकाला गया। लेकिन बहुत सारे लोग मिलकर भी लाख कोशिश के बावजूद मूर्ति निकालने में असमर्थ हुए। लेकिन इस खींचातानी में दाहिने तरफ के ऊपर भाग की क्षति हुई और वह अंश टूटकर गिर गया। उसी रात को एक अमंगल सूचक घटना घटी और उनके बड़े बेटे की पत्नी की मौत हो गई। बाद में वहीं पक्का मंदिर बनाने की उन्होंने कोशिश की। आज भी वहां काफी ईंटें पड़ी हुई मिलती हैं। लेकिन डर से वे और उस काम को आगे नहीं बढ़ा सके। आजकल

स्थानीय लोग् खेती में काम करते समय, बकरी, बत्तख आदि की बलि चढ़ाते हैं। उसके बाद वे धान काटने जाते हैं। यह मूर्ति मोटे तौर पर २$^{१}/_{२}$ फुट लम्बा और १$^{१}/_{२}$ फुट चौड़ा है।

दामोदर नदी से लगभग २ किलोमीटर की दूरी पर बसा है गुरुडी नामका एक छोटा सा गाँव। अंचल के लोग अत्यन्त परिश्रम से तेलकूपी के टूटे हुए पत्थरों को लाकर एक छोटे घर का निर्माण किया था। इस समय घर का छत ढह गया है और सिर्फ चार दीवार ही खड़े हैं। गुरुडी गाँव में हमें निम्नलिखित मूर्तियां देखने को मिलती है।

१) बाहुबली की मूर्ति : स्थानीय लोगों की भाषा में यह भैरव की मूर्ति है। लेकिन खगेन्द्रनाथ माजी इसे बाहुबली के रूप में चिन्हित करते हैं। मूर्ति की ऊँचाई ५ फुट चौड़ाई के साथ करीब २ फुट ईंच है। मूर्ति के ऊपर दोनों तरफ दो गंधर्व है, जिनके हाथ में वीणा है और जैसे वे उन्हें बजा रहे हैं। नीचे की तरफ दो नारीमूर्ति हाथ में चामर लिये खड़ी हैं। बाहुबली के हाथ में दंड़ सा कोई प्रतीक था जिसका निचला अंश अब नष्ट हो चुका है। मूर्ति के सिर पर मुकुट और कानों में कुंडल है। गुरुड़ी गाँव के लोग उसे तेलकूपी के पानी में से उठा लाए हैं।

२) ऋषभनाथ की मूर्ति : मूर्ति के सिर का अंश नहीं हैं। यह उन्हीं चार दीवारों में से एक पर टिककर खड़ा है। मूर्ति की औसत ऊँचाई ३ फुट आठ (८) ईंच है। चौड़ाई में २ फुट। नीचे लांछन चिन्ह बैल उत्कीर्ण है। मूर्ति कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ा है। नीचे चामर हाथ में लिए दोनों तरफ दो नारीमूर्ति। मूर्ति के दोनों तरफ २४ तीर्थंकरों की मूर्ति खुदी हुई थी लेकिन फिलहाल २० तीर्थंकर ही बचे हैं और ऊपर की पाँति नष्ट हो चुकी है।

३) विष्णुमूर्ति : गुरुडी के हाल में बताए एक मंदिर में यह मूर्ति नजर आती है। मूर्ति की औसत ऊँचाई ५ फुट है पर नीचे की तरफ ६ इंच सीमेंट से ग्रथित किया गया। मूर्ति १$^{१}/_{२}$ फुट चौड़ी है। ऊपर के दोनों हाथों में शंख और चक्र, नीचे बाएं हाथ में गदा और दाहिना हाथ $^{१}/_{६}$ अभय प्रदान करता हुआ। वह मूर्ति वस्त्र से ढँका हुआ है।

उसके गले में उपवीत (जनेऊ) और अलंकार है। नीचे बाई तरफ वीणा हाथ में लिए सरस्वती की मूर्ति है और दक्षिण में लगता है देवी लक्ष्मी

की मूर्ति है। इन दोनों मूर्तियों की निर्माण शैली आसाधारण है। हो सकता है कि ये राजा रूद्रशिखर द्वारा निर्मित मूर्तियां हो–लेकिन जोर डालकर कहना मुश्किल है । मूर्ति के सिर पर मुकुट और कानों में कुंडल के सिवाय उस घर में ४ शिवलिंग और एक छोटी सी मूर्ति देखी जा सकती है।

गुरुडी के करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर लालपुर गाँव बसा है। इस गाँव के अन्तिम छोर पर बिजली की चोट खाए एक विशाल वटवृक्ष के नीचे सम्पूर्ण अनहेलित स्थिति में कुछ दुर्लभ जैन मूर्तियां पड़ी हुई है।

१. देवीमूर्ति : यह मूर्ति भगवान नेमीनाथ की अधिष्टायिक अम्बिका की है। इस पर किये गये अलंकार देखने लायक है। मूर्ति का चेहरा नष्ट हो चुका है। ऊँचाई लगभग ७ फुट है। मिट्टी के नीचे करीब ११/२ फुट धँसी हुई इस मूर्ति को तेलकूपी के जल से लोग उठाकर लाये हो।

इसका दाहिना हाथ पूरा टूट चुका है। एवं बाएं हाथ से एक शिशु को पकड़ी हुई है। वात्सल्य प्रेम का यह अनुपम उदाहरण है। मूर्ति अपने मूल रूप में अति मनोहर थी। इसका प्रमाण उसके बालों की बनावट, गले का हार और कानों का कुण्डल देखने से ही मिलता है। इसके अलावे, दोनों हाथों पर बाजूबन्द बनाए गए हैं। मूर्ति के ऊपर का अंश बिल्कुल नष्ट हो चुका है। ऊपर से नीचे की तरफ देखते हुए पहले हमें नृत्य करती एक नारीमूर्ति और वाद्य बजाते हुए एक पुरुष मूर्ति नजर आती है। इस एक ही भंगिमा में बने बाई तरफ भी दिखाई देती है। ठीक उसके नीचे चामर डोलते हुए दो स्त्रियों की मूर्ति और उसके नीचे दाहिनी तरफ चामर धारी एक नारी मूर्ति। मूर्ति अलंकार और वस्त्र से सुसज्जित है।

२. भग्न दिगम्बर जैन मूर्ति : कई एक टूटी मूर्ति मिट्टी में पड़ी हुई दिख जाती है। एक तीर्थंकर मूर्ति का निचला भाग हमें देखने को मिलता है। पहले सारी मूर्ति कमल के ऊपर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ी थी। दोनों तरफ २४ तीर्थंकरों की मूर्तियाँ खुदी हुई थी। टूटे हुए अंश के ऊपर की तरफवाली मुँह की स्थिति अब भी उतनी ही सुंदर है। उस अंश में गंधर्व–ंधर्वी और नीचे चामर पकड़ी हुई एक स्त्री और एक पुरुष मूर्ति नजर आती है। मूर्ति के एकदम नीचे दो हाथी की मूर्तियां खुदी हुई है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि यह अजितनाथ की मूर्ति रही होगी।

श्रीचन्द्रराज चरित्र

यत्कदापि मनसा न चिन्त्यते, यत्स्पृशन्ति न गिरःकवे रपि।
स्वप्नवृत्तिरपि यत्र दुर्लभा, हेलयैव विदधाति तद्विधिः।।

अर्थात्–जिस बात का कभी मन में चिन्तन नहीं होता, जिसे कवियों की कल्पना भी छू नहीं पाती, जहाँ स्वप्न की भी पहुँच नहीं होती उस काम को पूर्व-कृत कर्म रूप-विधि बना देती है।

संसार में किसके मनोरथ पूर्ण हुए हैं?। आदि से अन्त तक कौन सुखी रहा है? यह भी एक कसौटी है। कसौटी पर कस जाने पर ही सोने की कीमत होती है, वैसे इस प्रकार की घटनाओं के घटने से ही जीवन महान जीवन बन जाता है, अस्तु, मुझे अपने पथ से विचलित न होते हुए मदना की प्राप्ति का उपाय करना चाहिए। इस प्रकार कुमार आगे बढ़ता हुआ एक कनकपुर नाम के नगर में जा पहुँचा।

इधर कनकपुर-नरेश कनकध्वज दैवयोग से अपुत्र ही परलोक सिधार गये थे। इसलिये उनके मंत्रियों ने पंच दिव्य किये। तीन दिन नगर के बाहिर और भीतर हाथी, घोड़ा छत्र, चँवर और कलश अधिकारियों के साथ घूमते रहे। कुमार श्रीचन्द्र पर अभिषेक हो गया। मंत्रियों ने उससे राजकुमारी कनकावली का विवाह करके उसे राज्य-सिंहासन पर विराजमान कर दिया।

नगर में धूमधाम से सवारी निकली। प्रजाजनों ने अभिनन्दन किया। कैदी छोड़े गये। विद्यार्थियों को अनाथों को मिठाइयां बांटी गई। देव-मंदिरों में पूजा-विधि संपन्न की गयी। राजा श्रीचन्द्र प्रजा का पिता के समान पालन करने लगा।

एक समय राजा से लक्ष्मण मंत्री ने प्रार्थना की कि महाराज! आपके वंश-परिचय के अभाव में गीतों के गाने में बड़ी अड़चन होती है। कुमार ने इस आग्रह का निषेध करके गुणों को देखियें, बस इतना ही संकेत किया।

वीणापुर नरेश की कन्या का स्वयंवर होने वाला था। लोग कनकपुर के रास्ते से वीणापुर जा रहे थे। गायनाचार्य कलरवजी भी इसी रास्ते से

आये थे। उन्होंने कनकपुर में श्रीचन्द्र प्रबन्ध बड़े ठाठ से गाकर लोगों को सुनाया। लोग सुनकर प्रसन्न हुए बहुत सा इनाम दिया। लोगों ने पूछा गायकजी! क्या आपने श्रीचन्द्रकुमार को देखा है? उसने कहा मैंने तो नहीं मेरे चाचा ने देखा है, और कुमार से भारी दान भी प्राप्त किया है।

कुशस्थल-पुराधीश-प्रतापसिंह-भूपतेः।
सती सूर्यवती-सूनुः श्रीचन्द्रो जयताच्चिरम्।।

श्रीचन्द्र प्रबन्ध को सुनने के कारण से मंत्री आदि लोग रात्रि में दरबार में न जा सके। प्रातः काल सभा में राजा ने पूछा आप लोग रात में न आये? उसने कहा देव! हम श्रीचन्द्र नाम के एक पुण्य पुरुष का चरित्र सुनने को रह गये थे। कुमार श्रीचन्द्र मुस्कराये।

लक्ष्मण मंत्री ने इस पर निश्चय किया कि ये ही वे श्रीचन्द्र कुमार है। जिनकी यशो-गाथायें हमने आज सुनी थीं। इस बात का प्रचार हो गया। लोग अपने तकदीरों की सराहना करने लगे, कि ऐसा पुण्य-पुरुष हमारा राजा बना है।

एक दिन महाराज श्रीचन्द्र घुड-दौड़ का आनन्द लेने, सेना के साथ उद्यान में पहुँचे थे। वहाँ उत्तम जाति के घोड़ों को अलग-अलग वेश से सजाया जा रहा था। इतने में पश्चिम की तरफ से घुटनों तक धूल से सने हुए, कंधे पर लाठी, और हाथ में जल-पात्र लिये हुए एक पुरुष आता हुआ दिखाई दिया। राजा श्रीचन्द्र ने अपने सिपाहियों को भेज कर उसे अपने पास बुलाया। पास पहुँचते ही उसने राजा को पहचान लिया। आगन्तुक की आंखों में हर्ष के आंसू छलछला गये। शरीर पुलकित हो गया।

जय श्रीचन्द्रकुमार जय, जय जय मेरे मीत!
छोड़ गये गुणचंद को, पाय प्रेम-प्रतीत।।

आ! हा!! हा!!! प्यारे मित्र गुणचन्द्र! तुम यहाँ कैसे आ गये? दोनों अभिन्न-मित्र बड़े प्रेम से एक दूसरे से भेटे। वायु मण्डल में खुशी से खुशी छा गई। उपस्थित मंत्रियों, सेनापतियों एवं पुरवासियों ने नृपमित्र गुणचन्द्र का बड़े भावभरे शब्दों में स्वागत किया।

राजा श्रीचन्द्र ने बड़े सौहार्द-भाव से कुशल-प्रश्न पूछना प्रारम्भ किया। मित्र! कुशल तो हो? तुम अकेले इधर कैसे आये? कहां कहां होते हुए आ रहे हो? कुशस्थल कब छोड़ा था? माता-पिता तो कुशल हैं? मेरे चले आने के बाद वहां क्या क्या घटनायें घटी? सब बातें सुनाओ—

गुणचन्द्र ने मित्र-दर्शन से गद्‌गद् होते हुए कहना शुरू किया–देव! उस रोज दैनिक कार्यों की अधिकता से मैं आपकी सेवा में न पहुंच सका। आपने विदेश यात्रा की बात जरूर कही, पर आज ही यह सब हो जायेगा ऐसा मुझे स्वप्न में भी ख्याल न था।

महाराज के आमन्त्रण पर, सेठ साहब के खोज करने पर, आपका न मिलना एक अतर्कित घटना के रूप में घट गया। बस, फिर क्या था? चारों ओर खोज शुरु हुई। आखिर मैं भाभीजी से मिला। उनके उदास चेहरे से मेरी उदासी और आशंकायें और बढ़ गई। आपकी बात भी याद आ गई। भाभी चन्द्रकलाजी ने कहा कि देवर! आपको स्वामी इस लिये छोड़ गये हैं, कि आपके माता-पिता को बहुत कष्ट होगा। ऐसा जानकर वे अकेले ही प्रस्थान कर गये। आप इस बात का प्रचार न करें कि कुमार भाभी से कुछ कह कर गये हैं।

प्रियवर! इस घटना से एवं आपके वियोग से मेरा हृदय बड़ा ही दुःखी हुआ। मैं ही क्यों? महाराजा, महारानी, सेठ, सेठानी नागरिक जिसने भी आपके गुम होने की बात को सुना, सभी रोए कलपे, और दुःखी हुए।

उन्हीं दिनों वहां एक ज्ञानी–गुरुदेव पधारे उसने आपके जन्म की बातें कहीं। महारानी सूर्यवतीजी एवं महाराजा आप के माता पिता हैं, एवं सेठ सेठानी पालक माता-पिता हैं इसका भी स्पष्टीकरण हुआ। उसी रोज सबको जय कुमार आदि की काली करतूतों का पता चला। उन्हीं गुरुदेव ने आपके उज्जवल–भविष्य का कथन किया। जिसे सुनकर हम सब आश्चर्य के साथ प्रसन्नता का भी अनुभव करने लगे।

गुण चन्द्र आगे कहता चला गया एक दिन भाभी चन्द्रकलाजी पीहर पधारीं। महेन्द्रपुर के सुन्दर मन्त्री का कुशस्थलपुर में आना हुआ। उनके कहने से आपका पता लगा। कुण्डलपुर के विशारद मन्त्री भी आये। उसने भी अपने वहां की घटनायें कह सुनाई। इन लोगों के कथन से महाराजा ने आप की भ्रमण-भूमि को जाना। निर्दिष्ट दिशा की ओर आप को खोजने के लिये सशस्त्र सिपाहियों को भेजा गया। धनंजय को मेरा भार सौंप कर मैं भी कुछ सिपाहियों को लेकर आप को ढूंढने निकल पड़ा। मैं कुण्डलपुर में चन्द्रलेखाजी से और चन्द्रमुखीजी से मिला। वहां से महेन्द्रपुर में सुलोचनाजी

से हाल मालूम किये । कान्ती नगरी में प्रियंगुमंजरीजी से मैं सत्कृत हुआ। अपने सिपाहियों को इधर उधर गांवों में भेजता हुआ मैं इधर की ओर आ निकला हूँ। मैंने सर्वत्र आपके यश की चर्चा सुनी। अभी-अभी एक यात्री से मैंने सुना, कि श्रीचन्द्र–कुमार अद्‌भुत ढंग से यहां के राजा हुए हैं। मेरी प्रसन्नता का पार नहीं रहा। मैं सब से आगे बढ़ गया। रास्ते में मेरा घोड़ा मर गया, उसकी परवाह न करते हुए मैं अकेला ही इस रूप में आ रहा हूँ।

आज आप के दर्शन पाकर कृतार्थ हो गया हूँ । आज मेरा सारा दुःख सुख रूप में परिणत हो गया है। कुशस्थलपुर में आप के आने की आशा से गिन-गिन कर दिन बिताये जाते हैं। माताजी सूर्यवतीजी ने आप के आगमन तक लड्डू-घी आदि का त्याग कर रक्खा है। सभी लोग आप के आने की टोह लगाये हुए हैं। आपके वियोग दुःख से ही वे दुखी हैं। अन्यथा सब कुशल मंगल है।

उपस्थित मंत्रियों ने, नागरिकों ने गुण चन्द्र के मुख से ये सारे हाल जानकर भारी खुशी का अनुभव किया। सब लोगों ने गगन भेदी आवाज से जयघोष किया। राजा श्रीचन्द्र सब के साथ वहां से चलकर नगर में आये। गुणचन्द्र को प्रधान मंत्री बनाया। पिछले सिपाही भी धीरे-धीरे सब आ पहुँचे--सर्वत्र प्रसन्नता का वायु--मण्डल छा गया।

इस प्रकार पूर्व जंन्म में किये तप के प्रभाव से श्रीचन्द्र कुमार सुखभोग करने लगे। ठीक है, तप ही इस लोक में और पर-लोक में सर्व-सिद्धि का प्रधान कारण होता है।

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूट-
मम्भोनिधि र्वहति दुस्सहवाडवाग्निम्।
कूर्मो विभर्ति धरणीं किल पृष्ठभागे,
ह्यंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।।

अर्थात्— कवि सम्प्रदाय में कहा जाता है कि पिये हुए कालकूट जहर को महादेवजी ने नहीं थूका। दुस्सह वडवाग्नि को समुद्र वहन करता ही है। पृथ्वी को अपनी पीठ पे कछुवे ने धार ही रक्खी है। बड़े आदमी जो बात अंगीकार कर लेते हैं उसका अन्त तक पालन भी करते हैं।

राज्य सुख को भोगते हुए भी चरित्र नायक राजा श्रीचन्द्रकुमार मदन मंजरी को नहीं भूला था। अपने मित्र गुणचन्द्र के साथ सलाह मश्विरा करके राज्य का भार लक्ष्मण मंत्री को सौंप कर दो बढ़िया घोड़ों पर दोनों मित्र

मदनमंजरी की खोज में एक रोज रात को चुपचाप निकल गये। घोड़े बड़े तेजी के साथ बढ़े जा रहे थे। बीहड़ जंगल पार हुआ जाता था। वहां एक वृक्ष के नीचे एक अवधूत को अतिसार की बीमारी से पीड़ित देखा। दोनों मित्र वहां रुक गये। परोपकार का स्थान जानकर पड़ोस के गाँव से औषधि लाकर श्रीचन्द्र ने उसका इलाज किया। स्नान मालिश आदि से उस अवधूत को कुमार ने सन्तुष्ट किया।

अवधूत ने प्रसन्न होकर कुमार की प्रशंसा करते हुए अपने पास से- लोहे का सोना बनाने वाला पारस-मणि उन्हें प्रदान किया। अवधूत का आयुष्य भी पूर्ण होने ही वाला था। उसकी मृत्यु हो जाने से कुमार ने गांव वालों को उस स्थान पर एक भारी अवधूत-मन्दिर बनाने का आदेश दिया और उसके योग्य धन भी दे दिया।

इस प्रकार परोपकार से पुण्य उपार्जन करते हुए दोनों मित्र जंगल में आगे बढ़ रहे थे। मार्ग में बांसों की झाड़ी में एक सौ आठ गांठोवाला बांस उन्हें दिखाई दिया। शास्त्र द्वारा बतलाये हुए गुणोंवाले सुपक्व और सीधे उस बांस को उन्होंने चीरा। उसमें से दो मोती निकले। कुमारने मित्र से कहा– दोस्त! यह बड़ा मोती नर और यह छोटा दाना नारी है।

नर नारी का जोड़ा ही संसार में अग्रगामी होता है। दोनों में एक दूसरे की रक्षा का भार बंटा हुआ है। अपने भी आज उसी कर्तव्य-भार से प्रेरित हुए आगे बढ़ रहे हैं। मदन मंजरी की अवस्था याद करता हूँ दिल बेचैन हो जाता है। उसे ढूंढ कर ही दम में दम लूंगा यही मेरी प्रतिज्ञा है, क्यों ठीक है न? गुणचन्द्र ने कुमार की कर्तव्य–परायणता सराहते हुए कहा अवश्य अवश्य।

इस प्रकार विनोद पूर्ण बातें करते हुए कुमार श्रीपर्वत नाम के एक ऊँचे और मनोरम पहाड़ की तलहट्टी में जा पहुँचे। अचानक उन्हें कोई स्त्री के करुण आक्रंदन की आवाज सुनाई दी। कुमार मित्र के साथ उसी ओर चले। वह शब्द ऊंचे से आ रहा था, कुमार भी उंचे चढ़े। वहां उन्होंने एक भीलनी को रोते देखा। बहिन! क्यों रो रही हो? तब भीलनी ने कहा–इस पहाड़ का नाम श्रीगिरि है। यहां से थोड़ी ही दूर वीणापुर नामका एक नगर है। वहां पद्मनाभ नाम का राजा राज्य करता है। एक दिन राजा के यहां कोई सुवर्ण-घट की चोरी हो गई चोर के खोज यहां तक आये सिपाहियों ने हम

को यहां देखकर मेरे पति को पकड़ लिया। जब पद चिन्ह मिलाये गये तो उनमें बहुत अन्तर रहा, फिर भी मेरे पति को ही चोर मानकर राजा तंग किया करता है राजा का कहना है कि तू सोने का घड़ा ला नहीं तो तुझे फांसी लगा दी जायेगी। मालिक! हम गरीब सोने का घड़ा कहां से लावें?। मेरे पति को मारा जाता है, इस दुःख से मैं आज यहां रो रही हूँ। कुमार ने उसके पास पड़े लोहे के घड़े को पारस मणि से छुआ दिया, वह सोने का हो गया। भीलनी को कहा कि ले लेजा, अपने पति को छुड़ा लेना। भीलनी खुश होकर उन्हें आशीर्वाद देने लगी। मालिक! भगवान् आपका भला करें। कुमार ने वहां जलाशय में स्नान और जल पान किया। भीलनी सुवर्ण कलश को लेकर चली गई।

इधर कुमार अपने मित्र के साथ आगे बढ़ते हुए वीणापुर जा पहुँचे। नगर के हाट-बाजार भव्य-प्रासाद जिनालय आदि से परिष्कृत राज मार्गों को देखते हुए एक सुन्दर चबूतरे पर थकावट मिटाने के लिये बैठ गये।

पाठको को याद होगा कुशस्थलपुर में पहिले श्रीचन्द्र कुमार को देखकर भगवान के मंदिर में एक सारिका—मैना ने दूसरे जन्म में यह कुमार मेरा पति हो, कहकर अनशन कर लिया था। उस मैना का जीव मरकर वीणापुर के राजा पद्मनाम की कन्या पद्मश्री नाम से हुई थी—वह अपनी अभिन्न-हृदया सखी मंत्री–पुत्री कमलश्री के साथ उद्यान-क्रीड़ा से निवृत्त होकर अपने महल की तरफ आ रही थी। उसने गुणचन्द्र के साथ कुमार श्रीचन्द्र को देखा।

विमलं कलुषीभवच्च चेतः,
कथयति पुरुषं हितैषिणं रिपुंवा।

हमारे सामने वाला आदमी हितैषी है, या दुश्मन इसका पता निर्मल और मलिन होता हुए हमारा मन ही दे देता है। श्रीचन्द्र के दर्शन मात्र से पद्मश्री का हृदय पद्म खिल उठा। उसने कुमार के पाण्डित्य को देखने के लिये अपने महल में पहुँचकर चन्दन से भरकर एक सुवर्ण का कटोरा अपनी दासी के साथ कुमार के पास भेजा। कुमार ने अपनी कनिष्टिका उंगली की अंगूठी उतार कर चंदन में डालकर उसे वापस कर दिया। दूसरी बार कुमारी ने बिखरे हुए फूल एक रकेबी में सजाकर भेजे। कुमार ने उनकी बढ़िया माला गूंथकर वापस कर दी।

गुणचन्द्र यह सारी लीला देखता ही रह गया। उसने कुमार से पूछा मित्र! ये क्या बाते हुई? कुमार ने कहा सुनो—कुमारी ने हमें यह सूचित किया कि यह नगर पहिले से ही श्रेष्ठ पुरुषों से भरा हुआ है फिर आप यहां कैसे समा सकोगे? मैंने समझा दिया कि अंगूठी में रत्न के जैसे हमें भी यहां स्थान मिल ही जायगा। फूल भेजने का मतलब यह था कि—फूलों की तरह हम अकेली हैं। उसका उत्तर मैंने दिया माला की तरह तुम भी सगुण और वांछित पुरुष वाली हो जाओगी।

इधर राज-कुमारी ने अपने भावों को जानने वाले सुन्दर स्वरूप वाले पूर्व जन्म से अभिलषित कुमार श्रीचन्द्र को मन ही मन वरण कर लिया। मंत्री पुत्री ने गुणचन्द्र को अपना स्वामी बना लिया। दोनों कन्याओं ने अपने घरवालों से अपने भाव सूचित कर दिये।

उधर उस भीलनी ने वीणापुर के राजा को सुवर्ण-घट देकर–अपने पति को छुड़ा लिया। भीलने पूछा यह सुवर्णघट तुझे कैसे मिला तो उसने सारा हाल कह सुनाया। भील अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये कुमार को पदानुसरण करते हुए नगर के चबूतरे तक जा पहुँचा। कुमार से बड़ा अनुनय विनय करके अपने घर ले गया और उन दोनों को पके हुए बड़े बड़े आमके फल अर्पण किये ।

कुमार श्रीचन्द्र ने पूछा इन दिनों में असमय में ऐसे आम कैसे और कहाँ से मिले? भीलने कहा मेरे राजा! इस पहाड़ के पांच शिखर है। उनमें ईशान शिखर सब से ऊंचा है। वहां विजयादेवी का मंदिर है। उसके बगीचे में देवी के प्रभाव से सदा फल देने वाला आम का पेड़ है। मैं वहीं से इन फलों को हमेशा लाता हूँ।

मालिक! पहाड़ में पहुँचने का केवल एक ही मार्ग है। सिवाय मेरे इस पहाड़ में जाने में कोई दूसरा समर्थ भी नहीं है। पुरखाओं से यही क्रम चला आया है। यह कितना कोश है? इसका उतार चढ़ाव कहां कितना है? इसमें कहां-कहां गुफायें आदि देखने योग्य हैं? मैं यह सब जानता हूँ। अगर आपकी इच्छा हो तो आइयें आपको भी इस पहाड़ पर घुमा लाऊं।

मित्र के साथ कुमार श्रीचन्द्र भील के निवेदन करने पर उस पहाड़ पर गये। गुफायें, घाटियां, झरणे, शिखर, पेड़, लताएँ आदि अनेक दर्शनीय

वस्तुओं को देखते हुए विजया-देवी के मंदिर के पास जा पहुँचे। पहिले उन्होंने थकावट उतारने को तालाब के स्वच्छ जल में स्नान किया। जल-विहार से थकान को मिटाकर। देवी के दर्शन किये। सदाफल नाम के उपवन में से भील ने समित्र कुमार के खाने के लिये अमृत के समान मीठे-मीठे आम, अनार, केले, दाख, सेव, संतरे लाकर उपस्थित किये। मुखवास के लिये इलायची, लौंग, सुपारी जायफल, जावित्री आदि लाया। श्रृंगार के लिये कमल चंपा, केवड़ा, चमेली, गुलाब, जुई, साटा, मोगरा आदि के फूलों का टोकरा भर कर सामने रखा। कुछ फूलों के हार-गजरे बने और कुछ योंही सूंघने को रखे गये।

भील की सहायता से भलीभांति पहाड़ का परिभ्रमण करके कुमार ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि अवसर आने पर अधिष्ठात्री देवी के आदेश से यहां एक नगर बसाऊंगा। जिन-भवन का भी निर्माण कराऊंगा।

बाद में भील को समयोचित हितोपदेश देकर कुमार अपने मित्र के साथ आगे के लिये अपने घोड़ों पर रवाना हो गये। दोनों सवार कष्टों की परवाह न करते हुए अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाये जा रहे थे। उनके और घोड़ों के शरीर पसीने से तर हो गये थे। आखिर जानवर ही तो ठहरे। बेचारे घोड़े थक कर चूर-चूर हो गये। मुंह से झाग निकलने लगे। घोड़े अपने आखिरी अक्षांश पर दौड़ रहे थे। यह देख उन दोनों ने लगाम ढीली छोड़ दी। घोड़े ठहर गये। वे दोनों उतर पड़े। पीठ सहलाते हुए पास ही के तालाब के तीर पर सघन पेड़ की छाया में विश्राम के लिये डेरा डाल दिये।

घोड़ों की जीन उतार दी गई। घोड़ों ने भी हिन हिनाते हुए अपनी थकावट को दूर की। कुमार ने पसीना सूखा कर निर्मल शीतल जल का पान किया। बाद पेड़ की छाया में कोमल घास के बिछोने पर लेट गये। उन्हें नींद आगई—

नींद में कुमार ने एक स्वप्न देखा कि—मेरु पर्वत पर कल्प वृक्ष की छाया में कोई अद्‌भुत स्त्री, मानो कोई कुल देवी, लक्ष्मी या सरस्वती हो बैठी हुई थी। उसने मुझे अपनी गोदी में उठा लिया। कुमार ने मित्र से कहा सखे! इस दिव्य स्वप्न का सुन्दर फल आज हमें जरूर मिलेगा।

इतने में जंगल में से व्यथित हरिणी की तरह चकित नेत्रों वाली दिव्य अलंकारों से देदीप्यमान लाल-वस्त्रों को धारण की हुई गर्भवती कोई सधवा स्त्री आती हुई श्रीचन्द्र को दिखाई दी। वह हडबड़ा कर उठ खड़ा हुआ,

उसके सामने गया, और-मातृ भाव से उसके चरणों में झुक गया। कुमार ने कहा माँ! आप इस प्रकार अकेली इस वन में कहाँ से आ रही हैं? उस आगंतुक संभ्रान्त महिला की दृष्टि कुमार की अंगूठी पर लिखे–श्रीचन्द्र कुमार–इस नाम की ओर गई तो उसने कुमार को पहचान लिया, उसके स्तनों से दूध की धारा छूट गई।

बड़ी प्रसन्नता से उस देवी ने पूछा बेटा! सेठलक्ष्मीदत्त के घर में प्रसिद्ध श्रीचन्द्र तुम्हीं तो हो न? चकित होकर कुमार ने उत्तर दिया जी हाँ- यह सुनते ही उसने श्रीचन्द्र को अपनी गोद में बिठा कर हर्ष के आंसुओं से नहलाती हुई कहने लगी।

ए मेरे आंखों के तारे! हृदय हार! ए मेरे लाड़ले बेटे! चन्द्रकुमार! आज मेरा जन्म सफल हुआ। मैं रानी सूर्यवती तेरी मां हूँ। तू मेरा बेटा है। पूर्व कर्मों की महिमा से तेरा मेरा बारह वर्षों का वियोग हो गया था। बेटा! ज्ञानी गुरु के वचनों से आशा ही आशा में मैंने ये दुःख के वर्ष बिताये हैं। आज तेरा मिलना हुआ है। यों अपने बेटे का लाड़ प्यार करती हुई अपने पुत्रवती होने का सच्चा सुख रानी ने उसी रोज अनुभव किया।

श्रीचन्द्र कुमार ने भी, विस्मित और प्रसन्न होते हुए पूछा माताजी आप का अंगज पुत्र होते हुए भी मैं सेठ से घर कैसे गया? और आप यहां कैसे पधारीं? इन दो बातों का स्पष्टी करण कीजियें। बेटा! जब तू गर्भ में था, तब तेरे पिता कुशस्थलाधीश युद्ध में पधारे थे। तेरे सौतेले भाई जयकुमार-आदि ने किसी निमित्त जानने वाले से जाना, कि राज्य-का उत्तराधिकारी तू होगा, तो तुझे मारने की उसने ठान ली। मुझे मेरी सखियों से पता लग गया। गुप्त रीति से तेरा जन्म होते ही फूलों की टोकरी में मालन के द्वारा तुझे मैंने बगीचे में पहुंचा दिया। सेठ लक्ष्मीदत्त ने देवी के संकेत से फूलों के ढेर से तुझे अपने घर ले जाकर अपना पुत्र प्रसिद्ध किया। चन्द्र पान के दोहद से हमने तेरे लिये श्रीचन्द्र कुमार नाम तजबीज करके यह अंगूठी बनवाई थी देख! यह तेरी उंगली में लगी हुई है।

लक्ष्मीदत्त के ले जाने के बात हमारी सखियों ने तुझे ढूंढ़ा वहां तेरा पता ही न लगा। मेरे दुःखों का पार नहीं था। उस दुःख में कुल देवी ने मुझे स्वप्न

में कहा कि किसी धनवान के घर तुम्हारा लालन पालन हो रहा है। वहीं वह सुरक्षित रह सकेगा। तू चिंता मत कर। देवी के कथन से मुझे कुछ शांति हुई।

बेटा! इसी प्रकार एक ज्ञानी गुरु के मुँह से भी मालूम हुआ कि तेरा मेरा मिलाप बारह वर्ष में होगा। धीरज से मैंने उस अत्यधिक कष्टमय समय को पार किया दैव योग से आज तेरा मेरा मिलना हो गया।

दूसरीबात—मेरा यहां कैसे आना हुआ? उसे भी सुन ले। गर्भवती होने के नाते मुझे लाल रंग के पानी में स्नान करने की इच्छा हुई। महाराजा ने उसका प्रबन्ध कर दिया। अपने बाग की एक सुन्दर बाबड़ी में गहरे लाल रंग से पानी को भी खून के समान लाल बना दिया गया मैंने उसनें दिलखोल कर खूब क्रीड़ा की। जब मैं बाहर निकली तब मैं खून से तरबतर मांस पिण्ड के समान दिखाई दे रही थी। इतने में किसी भारण्ड पक्षी-की दृष्टि मुझ पर पड़ी उसने मुझे मांस पिण्ड के भ्रम से पंजों में और चोंच में पकड़ एकदम झपट से उठा कर आकाश में उड़ा लिया।

उड़ते-उड़ते उसने मुझे जिन्दा जानकर कोई पूर्व पुण्य से यहां लाकर इस बन में छोड़ दिया—नमो आरिंहताणं—के ध्यान से मैं जिन्दा बची हूँ। रात तो मैंने पास की एक गुफा में बिताई और प्रातः काल होते ही वहां से निकलकर घूमती हुई इधर आई हूँ। यहां आज तुझे पाकर मेरा सारा दुःख सुख रूप में परिणत हो गया। मेरे लाल! आज मेरी तपस्यायें, कठोर अभिग्रह, भगवान का ध्यान, गुरुदेवों की कृपा सब फलीभूत हुए हैं। गूंगे के गुड़ की तरह मैं आज के अपने इस आनन्द का वर्णन नहीं कर सकती। पुत्र! तुझे पाक़र आज मैं पक्षी-प्रदत्त कष्ट को भी भूल चुकी हूँ। पर बेटा! एक नयी चिंता मुझे आतंकित कर रही है, वह यह कि मेरे अचानक इस प्रकार गायब हो जाने से तेरे पिता को कितना असह्य-दुःख होता होगा?

इस प्रकार मां के स्नेह भरे बचनों को सुनकर कुमार कहने लगा—माँ! आज आपके दर्शनों से मैं धन्य और कृतपुण्य हूँ। आज बिना बादलों की वृष्टि हुई है, जो मैंने आज अपनी माता को पाया है। जननी! संसार में आपसे बढ़कर कोई वस्तु मुझे नजर नहीं आती। बड़े-बड़े राज्य, सुन्दर पत्नियां, गुणवान्-मित्र, सर्वत्र विजय, अखूट वैभव, और भोग विलास की अपूर्व सामग्रियाँ ये सब आप की ही कृपा का फल मानता हूँ। माँ! पिता से आपको दशगुणा गौरव प्राप्त है। हजार शिक्षक बालक को जो शिक्षा नहीं दे सकते

उसको गुणवती माता एक इशारे में दे सकती हैं। मैं कहाँ तक वर्णन करूं आपकी महिमा अनन्त है।

कुमार के चुप हो जाने पर गुणचन्द्र ने मां सूर्यवती को कुमार का सारा चरित्र कह सुनाया। अपने लाड़ले बेटे की उदारता, दयालुता, शूरता और विस्मयता भरे चरित्र को सुनकर महारानी बहुत प्रसन्न हुई।

पूरब पुण्य प्रभावतें जंगल मंगल होय।
पुण्य करो संसार में पुण्य कियां सुख होय।।

पुण्यवान् पुरुष जहां जाते हैं, वहीं उनके लिये आनन्द मंगल होने लगते हैं। समुद्र उनके लिये क्रीड़ा सरोवर, सिंह उनके लिये सवारी, सांप उनके लिये फूलों की माला और विपत्तियाँ उनके लिये संपत्तियां बन जाती हैं जिनके जीवन में धर्म की आराधना से पुण्य संचय किया हुआ होता है।

चरितनायक श्रीचन्द्र उन्हीं पुण्यवान् पुरुषों में एक अनुपम पुण्य-पुरुष हैं। संपत्तियां उन्हें खोजती फिरती थीं। जंगल में अचानक माता का मिलाप होने के साथ ही वीणापुर नरेश के सिपाही कुमार के पद चिन्हों की खोज करते हुए वहां आ पहुंचे।

सिपाहियों के साथ मंत्री बुद्धिसागर ने कुमार से प्रार्थना की—राजन्! वीणापुर की राजकुमारी पद्मश्री आप में और मेरी पुत्री आप के इन प्रधानजी में अनुराग रखने वाली हो गई हैं। हमारे राजा ने आप की खोज में मुझे भेजा है। सुनियें! नंदीपुर के स्वामी हरिषेण की पुत्री तारलोचना के भेजे हुए शुक युगल को देखकर पिता की गोद में बैठी पद्मश्री मूर्छित हो गई। सावधान होने पर उसने कहा पिताजी! मैं पूर्व जन्म में कुशस्थलपुर की महारानी सूर्यवती के पास कर्कोटजा सारिका थी। भगवान् श्री आदिनाथ के मंदिर में श्री चन्द्रकुमार को पति रूप में पाने की इच्छा से अनशन कर यहां पैदा हुई हूँ। यहाँ मैंने उन्हीं कुमार को देखकर निश्चय किया है, कि अब इस भव में मैं उन्हीं को पति बनाऊंगी।

इसीलिये राजाजी ने आपको खोजने के लिये हमें भेजा है। सौभाग्य से आप यहां मिल गये हैं। राजन्! कृपा करके निज-चरण धूली से हमारे नगर को पवित्र कीजिये इतने में वीणापुर नरेश अपनी पुत्री के साथ वहीं आ पहुँचे। बड़े अग्रह समारोह के साथ कुमार को वीणापुर में प्रवेश कराया।

माता की आज्ञा से पद्म श्री और नंदीपुर की राजकुमारी तारलोचना के साथ कुमार श्रीचन्द्र ने ब्याह कर लिया। गुणचन्द्र का विवाह कमल श्री के साथ हो गया।

विवाह विधि सम्पन्न हो जाने पर कुमार ने उस बुद्धि सागर मन्त्री को अपने पिता महाराजा प्रतापसिंह के पास अपनी माता रानी सूर्यवती की कुशल-सूचना देने के लिये सांढणी-सवारों के साथ भेजा, और कहा कि-कनकपुर में लक्ष्मण मंत्री को भी इस बात की सूचना दे देवें।

श्रीगिरि पहाड़ के उस भील ने राजा श्रीचन्द्र को एक सोने की खान दिखलाई। प्रसन्नता से इसने वहां श्रीचन्द्र नगर बसाया। उस नगर के चारों ओर मजबूत किला बनवाया। बड़ी-बड़ी सड़के, चौराहे, बाजार, मठ, मन्दिर और हाट-हवेलियों से सम्पन्न उसे बनाया। बाग बगीचों कुओं और तालाबों से उसे सुसज्जित किया।

श्री गिरि के मध्य भाग में श्री चन्द्र ने चार दरवाजों वाला विशाल उन्नत सुवर्ण शिखरों से विराजित एक श्री जिन मन्दिर बनवाया। उसमें श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रतिष्ठा करवाई। आस-पास के भयंकर जंगल को साफ करवा कर नये नगर बसाये। दान पुण्यों से, उत्सवों से, धर्मशाला, मन्दिर, विद्यालय, ज्ञान भण्डार, छात्रावास, अन्नक्षेत्र, औषधालय, उद्योग मन्दिर आदि नये निर्माणों से दुनिया में त्याग का एक आदर्श पैदा किय। सारा संसार उस परोपकारी धर्मात्मा राजा श्री चन्द्र के गुणों को गाने लगा।

कल्याणपुर से आये किसी यात्री ने एक रोज राजा श्री चन्द्र से कहा कनकपुर में आजकल बड़ी गड़बड़ी चल रही है। वहां का राजा तो न जाने अपने राज्य भार को मन्त्री लक्ष्मण के कंधे पर डालकर कहीं चल गया है। लक्ष्मण पर गुणविभ्रम आदि छह राजाओं ने मिलकर चढ़ाई कर दी है। मंत्री लक्ष्मण यथाशक्ति अपनी फौज के साथ विरोधियों से टक्कर ले जरूर रहा है पर-घण जीते रे लक्ष्मण-वाली कहावत चरितार्थ हो जाय ऐसी सम्भावना है।

यह बात सुनकर राजा श्रीचन्द्र का मुंह मारे क्रोध के तम तमा उठा। उनकी भुजायें फड़कने लगीं। उन्होंने होठ काटते हुए मंत्री गुणचन्द्र से कहा तुम अभी पद्मनाभ आदि राजाओं को सेना सहित साथ लेकर जाओ और शत्रुओं को अपनी करणी का फल चखा दो।

आज्ञा की ही देर थी। रण भेरी बज उठी। शंख ध्वनि से दिशायें गूंज उठी। रण बंके सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र सूर्य प्रकाश में झिलमिला उठे। पृथ्वी कांप उठी। घोड़ों की टापों से उठती हुई धूल हाथियों के मद से शांत हुई। महाराज श्रीचन्द्र की जय के नारों से आकाश का पर्दा फटने लगा। राजा श्रीचन्द्र भी अपने तेजस्वी घोड़े पर सवार होकर प्रयाणोन्मुख सेना के सामने आकर खड़े हो गये। सैनिकों ने फौजी ढंग से अपने महाराजा का अभिवादन क़िया। आज्ञा पाकर सेना ने आगे को कूच किया। महाराजा तीन पड़ाव तक साथ गये। गुणचन्द्र को अपना चन्द्रहास खड़ग देकर श्रीगिरि की ओर वापस लौटे।

रास्ते में एक विशाल वट-वृक्ष की छाया में विश्राम के लिये सो गये पर किसी अतर्कित कारण से कुमार श्री चन्द्र क़ो नींद नहीं आ रही थी। इतने में वहां कुछ जोगणियां उस बड़ पर बैठकर कहने लगी—कुशस्थलपुर का राजा राणी के वियोग में जल मरेगा, चलो! देखने के लिये इसी बड़ पर बैठकर उड़ चले—

कुमार ने भी फुर्ती से बड़ की खोखल में अपना आसन जमा लिय। बड़ उड़ा। कुशस्थलपुर के बाहर वह जमीन पर उतरा अदृश्य रूप से जोगणियां और कुमार नगर की तरफ चले। रास्ते में मानवों का समुद्र उमड़ता हुआ देखकर कुमार ने अवधूत का वेश बनाया और उस टोले में जा पहुँचा। वहां मंत्री आदि समझा रहे हैं पर महाराजा प्रतापसिंह अपनी गोत्र देवी के सामने धधकती आग में–अपने आपको झोंकने की तैयारी कर रहे हैं।

क्रमशः

संकलन—

भगवान् महावीर फाउन्डेशन, चेन्नई द्वारा जैन धर्म की उत्कृष्ट पुस्तकों पर राष्ट्रीय पुरस्कार २००३ घोषित

भगवान् महावीर के २६०० में जन्म शताब्दी वर्ष वहोत्सव के अवसर पर भगवान् महावीर फाउन्डेशन, चेन्नई द्वारा जैन धर्म-दर्शन की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता २००३ आयोजिक की गयी थी। देश भर से प्रात जैन धर्म–दर्शन की पुस्तकों में से विद्वत् मंडल की संस्तुति के अनुसार निम्नलिखित पुस्तकों को पुरस्कृत किया गय है–

क) हिन्दी कृति–

जैन धर्म की सांस्कृतिक विरासत

–प्रोफेसर डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर (राज.)

ख) अंग्रेजी कृति–

JAINISM : A way to Peace, Happiness & Social well being

–डॉ. जगदीशप्रसाद जैन, (अध्यक्ष–जैन मिशन) दिल्ली

इन पुस्तकों में जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, समाज, जीवनशैली एवं कल का प्रामाणिक विवेचन आधुनिक युग के सन्दर्भ में उपर्युक्त मनीषी लेखकों ने सुबोध शैली में किया है। इनके प्रकाशन से एक ही स्थान पर जैन संस्कृति की प्रामाणिक जानकारी जिज्ञासु पाठकों को मिल सकेगी।

इन दोनों विद्वानों को इस विशिष्ट पुरस्कार के अन्तर्गत प्रत्येक को इक्यावन हजार (५१०००/-) रुपये की राशि के साथ प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृतिचिन्ह आदि फाउन्डेशन द्वारा चेन्नई में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदन किया जायेंगे। इन दोनों पुस्तकों का प्रकाशन भी फाउन्डेशन के सहयोग से शीघ्र किया जायेगा।

दुलीचन्द जैन

संकलन—

तीर्थंकर मानविकी कला एवं पुराण विज्ञान, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान पुरुस्कार हेतु प्रवष्टियां आमंत्रित

श्री २५००वां भगवान् महावीर निर्वाण महोत्सव न्यास द्वारा संचालित तीर्थंकर मानविकी कला एवं पुराण विज्ञान, शोध एवं प्रतिक्षण संस्थान महावीर भवन, महावीर मार्ग, कम्पू द्वारा जैन साहित्य के सृजन अध्ययन। अनुसंधान को प्रोत्साहन देने हेतु स्वर्गीय कैलाश चंद जैन मेमोरियल चैरिटेबल सोसायटी के द्वारा कैलाशचंद पुरूस्कार प्रदान करने के लिये शोध केन्द्र को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

यह पुरुस्कार ३१००००० रूपये का होगा। वर्ष २००२-०३ में जैन धर्म की किसी भी विद्या में लिखी गई प्रकाशित/अप्रकाशित कृतियों के मौलिक लेखन के लिये दिया जायेगा। पुरुस्कार हेतु प्रकाशित। प्रकाशित दोनों प्रकार की कृतियां भेजी जा सकती है। पुरस्कार के मूल्यांकन के लिये प्रकाशिा की ४/२ (प्रकाशित की ४ तथा अप्रकाशित की २) प्रतियां लेखक/प्रकाशक। अन्य किसी व्यक्ति द्वारा मंत्री २५००वां भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव न्यास को प्रेसित की जानी चाहिये। जो कृतियां पुरुस्कृत हो चुकी हैं उन्हें यह पुरुस्कार नहीं दिया जावेगा। इस पुरुस्कार के लिये प्रविष्टियां ३० जून २००४ तक भेजी जा सकती है। पुरुस्कार की नियमावली महावीर न्यास से मंगायी जा सकती हैं।

तेजकुमार जैन

तित्थयर वर्ष २७
अप्रैल २००३ से मार्च २००४

निबन्ध

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	आत्मदर्शन एक आलोकपात जैन एवं जैनेत्तर परिपेक्ष्य में	श्रीमती लता बोथरा	५
२.	जैन धर्म और पर्यावरण-संतुलन	मुनि श्रीनेमियन्दजी महाराज	८३,१३९
३.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर सुयशमुनिजी	८८, १४५, २०३, २५१, ३२२, ३८८, ४४८
४.	संस्मरण-एक अविस्मरणीय यात्रा का	श्रीमती राजकुमारी बेगानी	१९५
५.	जैन विद्या का अनुशीलन विदेशिक दृष्टि	श्री शास्त्री प्रकाश वर्मा	२१५
६.	भ. महावीर और औषधि विज्ञान	मुनि दर्शन विजयजी	३११, ३८० ४३९
७.	आदि पुराण में राजनैतिक विचारों की अभिव्यन्जना	श्रीमती मंजू जैन	३६१
८.	आचार्य हरिभद्र श्रावक धर्म विधि प्रकरण (एकपरिचय)	डॉ. सागरमल जैन	४३१
९.	अनेकान्त का व्यवहारिक पक्ष	डॉ. सागरमल जैन	४९१
१०.	क्षमापना	श्रीमद राजचन्दजी	५१०
११.	अपकाय जीव की वैज्ञानिक परिकल्पना	डॉ. जीवराज जैन	५५१
१२.	जैन दर्शन में अंडा और मांस भक्षण	डॉ. जीवराज जैन	५५६
१३.	आर्य हेमचन्द्र की दृष्टि में भारतीय समाज	डॉ. जयशंकर मिश्र	६११
१४.	सामायिक पाठ	श्रीमद् राजचन्द्रजी	६२६

१५.शाकाहार का सिद्धान्त	डॉ. जीवराज जैन	६७१
१६.पुरुलिया के देवालयों की निर्माण शैली	श्री सुभाष राय	६७८

१७.समाचार सार — ५१, ११३, १७३, २२५, २८५, ३४६

१८.संकलन — ६४, ११६, १७६, २३१, २८६, ३४७, ४०७, ४६७

कथानक

३. श्रीचन्द्र राज चरित्र — १००, १५३, २०९, २६५, ३३६, ३९८, ४५०, ५१९, ५६५, ६३८, ६९२

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653
Fax : 2271-2151,

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

CALTRONIX
12 India Exchange Place
3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

—आत्मा की स्वतन्त्रता—

मनुष्य का भविष्य उसके अपने अधीन ही है। भविष्य में जिस स्थिति या गति में जन्म लेने की इच्छा हो, जो शक्तियाँ प्राप्त करने की अभिलाषा हो, उसके योग्य सामग्री अभी से तैयार करते रहना चाहिए। यदि उसके लिए पूर्ण तैयारी हो जाय तो उसका भविष्य वैसा ही बन जायगा।

इसलिए हे अनन्त शक्तिशाली आत्मा ! पूर्व के स्वयं अपने ही पुरुषार्थ से अब तुमने जिस दशा को प्राप्त किया है। उसके लिए चिन्ता नहीं करो। वर्तमान में कर्म करने में चौकस रहो। अच्छा या बुरा कार्य करने में तुम स्वाधीन हो परन्तु करने के पश्चात् उसका वैसा फल भोगना ही पड़ेगा। उस समय बकरे की भाँति मैं मैं करने की जरूरत नहीं परन्तु सिंह की भाँति वीर बन कर्म परिणामों को भोगने के लिये तैयार रहना चाहिए और भविष्य उज्वल बनाने का विचार करना चाहिये।

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

SSRM/KOL/RMS/WBRNP-070/2004-06
Vol. XXVII. NO. 12. TITTHAYARA March 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225